पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5117, नवम्बर, 2015

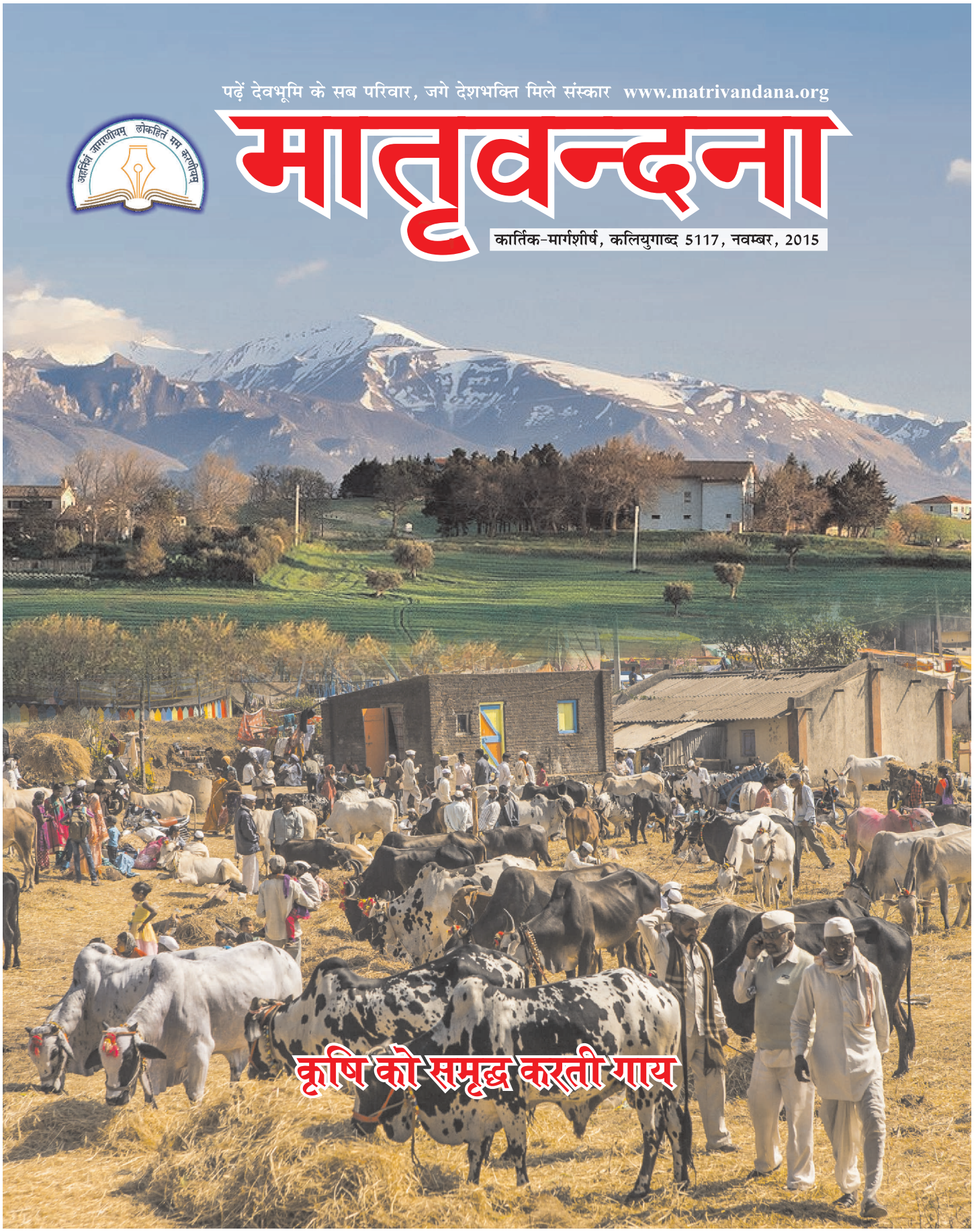

कृषि को समृद्ध करती गाय

एसजेवीएन विश्व पटल पर

भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भूटान में 600 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना का शिलान्यास किया गया

2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि

- हिमाचल प्रदेश में 412 मेगावाट की रामपुर जल विद्युत परियोजना
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- वित्तीय वर्ष 2011-12 के दौरान 7610 मिलियन यूनिट तथा वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान 7183 मिलियन यूनिट का रिकार्ड विद्युत उत्पादन।
- एकल राज्य से राष्ट्रीय निगम के रूप में विस्तार एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर उपस्थिति।
- ऊर्जा के अन्य स्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 13 जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण।

एसजेवीएन लिमिटेड
SJVN Limited
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU **www.sjvn.nic.in**

SHARAD/07/2014

निर्माणाधीन परियोजनाएं: 588 मेगावाट लूहरी, 66 मेगावाट धौलासिद्ध (हिमाचल प्रदेश); 252 मेगावाट देवसारी, 60 मेगावाट नैटवार मोरी, 51 मेगावाट जाखोल सांकरी (उत्तराखण्ड); 900 मेगावाट अरुण- III (नेपाल); 600 मेगावाट खोलोंग्चू, 570 मेगावाट वांग्चू (भूटान); 378 मेगावाट कामेंग- I, 60 मेगावाट रंगानदी-II, 80 मेगावाट दोईमुख स्टेज II एवं सी-रिवर बेसिन (अरुणाचल प्रदेश); 1320 मेगावाट बक्सर ताप विद्युत (बिहार);

'नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते।
शंखचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।।'

भावार्थ : देवों द्वारा पूजित, धनधान्य सम्पन्न, वैभव पीठ पर विराजमान, शंख-चक्र और गदा धारिणी महालक्ष्मी को मेरा नमस्कार है।

वर्ष : 15 अंक : 10

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, कलियुगाब्द 5117, नवम्बर, 2015

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

✡

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

गौरक्षा, देश रक्षा

भारत में प्राचीनकाल से ही गोरक्षा और गोसेवा को बहुत महत्व दिया गया है। महाराजा रघु, भगवान श्रीकृष्ण, छत्रपति शिवाजी ने गोरक्षा को अपने शासन का मुख्य अंग माना। सन् 1857 के महासमर का एक प्रमुख मुद्दा गाय की चर्बी का नई राइफल की गोलियों में प्रयोग ही था। बहादुरशाह जफर ने भी तीन बार गोहत्या पर प्रतिबंध की घोषणा कर हिन्दू समाज की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया था। कूका आंदोलन का केंद्रबिंदु गोरक्षा ही था। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का कथन महत्वपर्ण है। उन्होंने कहा था, 'मैं गाय की पूजा करता हूं। यदि समस्त संसार इसकी पूजा का विरोध करे तो भी मैं गाय को पूजूंगा..... गाय जन्म देने वाली मां से भी बड़ी है।❖

सम्पादकीय	आस्था और समृद्धि की प्रतीक गाय	3
प्रेरक प्रसंग	मिट्टी में दबा मूल	4
चिंतन	सामाजिक समरसता के सूत्र	5
आवरण	गोरक्षा, देश-रक्षा	6
संगठनम्	विश्व संवाद केन्द्र शिमला कार्यालय उद्घाटन	11
देवभूमि	स्वच्छता के लिए सभी का हो एकजुट प्रयास	12
देश-प्रदेश	नाबालिग मुस्लिम लड़की का निकाह गैरकानूनी	14
काव्य जगत	जागो हे भरत!	16
साक्षात्कार	एकात्म मानव दर्शन के 50 वर्ष पूर्ण	17
स्वास्थ्य	गिलोय प्रकृति का अमूल्य वरदान	19
महिला जगत	महिला सशक्तिकरण में कुटुम्ब श्री योजना	20
संस्कृतम्	संस्कृतम वदाम	20
कृषि	अब सेब पहाड़ का मोहताज नहीं	22
दृष्टि	एक लीटर पानी से आजीवन हरा-भरा	23
घूमती कलम	आज भारत की गीता, भारत का योगदर्शन	24
पुण्यजंयती	विश्व को ईश्वरीय मार्ग दिखाने वाले गुरु नानक देव महाराज	26
प्रतिक्रिया	दोहरे मापदंडों के चलते साम्प्रदायिक सद्भावना असंभव	27
समसामयिकी	सभी धर्मों के लिए महत्वपूर्ण है गौमाता	28
विविध	वीर सावरकर का क्रांति दर्शन	29
बाल जगत	फुलवारी	31

पाठकों के पत्र

नशे के जाल में फंसती युवा पीढ़ी

सम्पादक महोदय,

अपने आस पास के परिवेश को देखते हुए ध्यान में आता है कि हमारी युवा पीढ़ी नशे के जाल में फंसती जा रही है। विभिन्न संचार माध्यमों को भी प्रतिदिन इस प्रकार के समाचार देखने-सुनने को मिलते हैं। वर्तमान में हमारे देश में कुल जनसंख्या का 60 प्रतिशत भाग क्योंकि युवा हैं अत: इतनी बड़ी मानव संसाधन को रचनात्मक कार्यों में लगाकर राष्ट्रहित में इस युवा बल का उपयोग आवश्यक है। यद्यपि प्रशासन एवं सरकारें अपने-अपने स्तर पर नशे की रोकथाम के लिए प्रयास करते हैं किन्तु फिर भी नशे के व्यापारी अपने हित साधने के लिए युवाओं के जीवन को अंधकारमय बनाने में सफल हो जाते हैं। आपकी पुस्तक के माध्यम से मैं सरकार को सुझाव देना चाहता हूं कि युवाओं का रूझान यदि खेलों व अन्य सामाजिक गतिविधियों की ओर मोड़ा जाए तो युवा नशे की ओर आकृष्ट नहीं होंगे। इस के लिए गांव-गांव खेलों को बढ़ावा देना होगा साथ ही युवा क्लबों, युवक मण्डलों का गठन करना होगा। ऐसा करके हम कुछ हद तक इस समस्या को कम कर सकते हैं। ❖

शान्ति स्वरूप, बिलासपुर

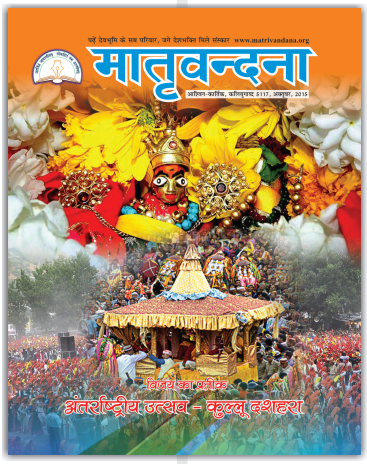

सम्पादक महोदय,

मातृवन्दना मासिक पत्रिका का मैं पिछले लगभग डेढ़ साल से नियमित पाठक हूं और इस पत्रिका के माध्यम से मैंने अपने देश और संस्कृति को काफी गहराई से जाना है। मैंने बाहरवीं तक की पढ़ाई पब्लिक स्कूल में की है, अत: मैंने भी आजादी की लड़ाई के बारे में वही पढ़ा है जो कि प्रचारित और प्रसारित किया जाता रहा है। अत: आप से अनुरोध है कि पत्रिका में प्रति माह आप हमारे आजादी के वीर सपूतों जैसे शहीद भगत सिंह, लाला लाजपतराय, चंद्रशेखर आजाद और भी न जाने कितने वीर होंगे जो कि न हमें कभी बताया गया ना पढ़ाया गया, उन सभी की प्रेरणा स्त्रोत कहानियां आजादी में उनके योगदान की एक कहानी सम्मिलित करें ताकि हम अपने साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को भी बता सकें कि हमने कितने संघर्ष के बाद आजादी पाई है और उन सच्चे वीर सपूतों को अपना आदर्श बना सकें।❖

आदित्य चौधरी, कांगड़ा (हि.प्र.)

सामाजिक समरसता

सम्पादक महोदय,

मैं आपका ध्यान समाज में फैली हुई कुरीतियों की ओर लाना चाहता हूं। जैसा कि सब जानते हैं कि हिमाचल प्रांत एक देव भूमि है और यहां देवता को उच्च स्थान दिया गया है। सामाजिक समरसता एक ऐसा विषय है जो समाज को जोड़ने का कार्य करती है लेकिन समाज में जाति की इतनी बड़ी खाई बन चुकी है जिसके कारण हिन्दू समाज बंट रहा है। जिन लोगों को हम सभी निम्न जाति का दर्जा देते हैं वह समाज आज अपने आप को उपेक्षित महसूस कर रहा है ओर अपने धर्म को छोड़कर दूसरे धर्मो में जा रहा है। तो हमारा विचार यह है कि आप हिमाचल प्रांत की ऐसी घटना को प्रकाशित करें जिसमें सामाजिक समरसता का भाव हो और हमारा मातृवन्दना का पाठक उसे पढ़कर चिन्तन करे कि अगर हमें सामाजिक कुरीतियों को मिटाना है तो हमें स्वयं से प्रेरणा लेकर इस पर कार्य करना होगा। आशा करता हूं कि आप इस विषय पर ध्यान देंगे और इस विषय को अच्छे ढंग से प्रकाशित करेंगे।❖

अप्पू, ठियोग शिमला

स्मरणीय दिवस (नवम्बर)

दीपावली	11 नवम्बर
गोवर्धन पूजा	12 नवम्बर
भैया दूज	13 नवम्बर
बाल दिवस	14 नवम्बर
छठ पूजा	17 नवम्बर
गोपाष्टमी	19 नवम्बर
देव प्रबोधनी एकादशी	22 नवम्बर
रेणुका मेला सिरमौर	22 नवम्बर
श्री गुरू तेगबहादुर शहीदी	24 नवम्बर
गुरू नानक देव जयंती	25 नवम्बर

आस्था और समृद्धि की प्रतीक गाय

सनातन एवं सभ्य समाज में कृतज्ञता एक स्वाभाविक गुण है। सनातनता पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों से बनती है। उसी से सभ्यता और संस्कृति का निर्माण होता है। भारतीय अथवा हिंदू संस्कृति में समाज का उपकार करने वाले प्राणियों एवं पदार्थों के प्रति सर्वदा कृतज्ञता प्रकट की गई है। सूर्य-चंद्रमा-वायु आदि को हमने देवता मान कर उनकी पूजा की है। धरती और नदियों को माता की संज्ञा देकर उनके प्रति नित्य नमन किया है। उसी प्रकार गाय को माता मानकर और अधिक विशिष्ट स्थान देते हुए उसके रोम-रोम में देवताओं का वास स्वीकृत किया है। 'विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार' कह कर भगवान के मनुष्य रूप में अवतरित होने का कारण गोरक्षा भी बताया है। 'गौमये वसते लक्ष्मी' कह कर उसके गोबर तक को पवित्र एवं महत्वपूर्ण माना है। वेदों में उसे अहत्या अर्थात् जिसकी हत्या नहीं की जा सकती, ऐसा कहा गया है। भले ही प्राक् वैदिक काल में मुख्य व्यवसाय पशुपालन होने के कारण पशुधन ही पूर्वजों का मुख्य आहार हो तथापि सवत्सा एवं पाली गई गायों को मारने का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। पुनः उत्तर वैदिक काल से आगे निरन्तर गाय हमारी धार्मिक आस्थाओं की प्रतीक बनती गई। यही नहीं कृषि आधारित हमारी अर्थव्यवस्था की वह आधार स्तम्भ मानी गई। गांव और गोः गावः अथवा गाय में शब्दों की इसलिए समानता है कि गांव और गाय एक-दूसरे के पूरक हैं। गांव है तो गाय है, गाय है तो गांव है। ग्राम विकास में गाय का महत्वपूर्ण योगदान है। जहां गाय अपने दूध-घी-दही-मक्खन से सम्पूर्ण परिवार को पुष्ट करती है, वहीं अपने गोमूत्र एवं गोबर से हमारे कृषि धान्य को उपजाने में उसके संवर्धन एवं संरक्षण में उपयोगी सिद्ध होती है। गाय केवल दूध देने वाला एक पशु है, यह मानना नितान्त मूर्खता होगी जबकि गोवंश का पर्यावरण सुरक्षा प्रयोग में आने वाली कई वस्तुओं के निर्माण में तथा स्वास्थ्य पुष्ट करने में सम्पूर्ण उपयोग किया जा सकता है। 'मातृवन्दना' के इस मास के अंक में आवरण लेखों में इसकी आंशिक साररूप जानकारी दी जा रही है। गाय सम्पूर्ण देश के लिए आस्था की प्रतीक है। केवल हिन्दुओं के लिए नहीं अपितु सभी धर्मों को मानने वाले लोगों के लिए इसका बड़ा योगदान है क्या अन्य धर्मों के लोग इसके दूध-घी-दही-लस्सी से परहेज करते हैं?क्या अपने खेतों में इसका गोबर डाल अच्छी फसलें नहीं उगाते? फिर क्यों अत्यन्त श्रद्धा की साकार मूर्ति गाय की हत्या की जाती है। गो-वध को बंद करने का हिमाचल सरकार के समान यदि अन्य समस्त राज्य भी कड़ा कानून बनाए तो निश्चय से बहुसंख्यक समाज की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचेगी और न ही भविष्य में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया की सम्भावना बनी रहेगी। इसी आशा और विश्वास के साथ आप सभी को दीपावली की हार्दिक बधाईयां।

मिट्टी में दबा मूल

एक छोटा सा गांव। केवल सौ घरों की बस्ती। उसमें रहने वाले एक संन्यासी प्रातः काल से सायंकाल तक गांव के रास्ते साफ करने, अशिक्षितों को पढ़ाने, रोगियों की दवा करने, वृद्धों और अपंगों की सहायता करने, कथा-कहानी सुनाने आदि कामों मे लगे रहते थे। गांव के अज्ञानी लोग बेचारे साधु की कदर करना क्या जानें। एक बार गांव में एक सुशिक्षित नौजवान कार्यकर्ता आया। साधु से चर्चा कर वह जान गया कि वे काशी के संस्कृत के महान् विद्वान् हैं। ऐसी महान् विभूति ऐसे छोटे गांव में सड़ती रहे, इस पर ही उसे आश्चर्य हो रहा था।

युवक बोला- 'महाराज आप जैसी प्रतिभा को तो देश-विदेश में जाकर संस्कृति का प्रसार करना चाहिए। यहां कहां गांव में पड़े हैं?' साधु बोले- 'बेटा, देश में ऐसे मनुष्यों की कमी नहीं है। कमी है तो धूल में डट जाने की इच्छा रखने वालों की। चतुर्दिक् कीर्ति फैलाने वाले विद्वान् तो बहुत हैं, किन्तु धूल-मिट्टी में दबकर भावी विकास के वृक्ष का मूल बनने, अपेक्षारहित बनकर धरती के अंदर दबे रहते हुए ऊपर खड़े वृक्ष को पोषण पहुंचाने वाले विरले ही मिलते हैं। वृक्ष को फैलने के लिए मूल भी तो चाहिए। मैं ऐसा ही मूल बनना चाहता हूं। कभी उसी में से वटवृक्ष बनेगा।' युवक को अनुभव हुआ प्रतिभा भावी वृक्ष का मूल बन रही है।❖

धर्म का मर्म

एक करूण क्रंदन, नारी का चीत्कार और क्षण भर बाद ही शांति। इस चीत्कार ने अपने खेतों से लौटते हुए एक व्यक्ति को चौंका दिया। जिधर से क्रंदन का स्वर फूटा था उस ओर दृष्टि डालने पर देखा कि एक अनपढ़ सी दिखने वाली महिला चीखते-चीखते अचेत हो गयी है। पल भर को वह रूका, मुड़ा और एक काले सांप को भागते देखकर सब कुछ समझ गया और उपचार में जुट गया। जिस दाहिने पैर में सर्प ने दंश किया था उसे ऊपर की ओर दबाकर पकड़ लिया जिससे विष शरीर में न फैले। आस-पास कोई रस्सी नहीं दिखाई दी। बांधने के लिए कुछ नहीं मिला तो अपना जनेऊ उतार कर उसी को कसकर बांध दिया। सांप के काटे हुए स्थान पर हंसिया से कुरेद कर काला खून निकाल दिया। तब तक गांव के और लोग भी उधर आ गये। 'एक संभ्रान्त कुल में जन्म लेकर पवित्र जनेऊ को स्त्री के पैर से छुआकर इसने धर्म का सत्यानाश कर दिया', कुछ धर्म के ठेकेदारों ने निंदा-बाण चलाये पर वह परोपकारी उस ओर ध्यान न देकर उस स्त्री की प्राण-रक्षा में लगा रहा और अन्ततः उसके प्राण बचा ही लिए। एक निरीह स्त्री के प्राण बचाने का संतोष मुख पर झलक रहा था। ये थे हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

सामाजिक समरसता के सूत्र

- महात्मा चैतन्यमुनि

अंहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को यम कहा गया है। यदि हम इन यमों का गहराई से मनन और चिन्तन करें तो मानो इनमें विशुद्ध सुसंस्कृत भारतीय का स्वरूप विवेचित किया गया है। मन, वचन व कर्म से किसी के प्रति भी बैर की भावना न रखना अहिंसा है। सुख-दु:ख, हानि-लाभ, यश-अपयश में सदा सत्य के साथ ही जुड़े रहना सत्य है। किसी की वस्तु को लाभवश न चुराना अस्तेय है। अपनी इंद्रियों पर संयम, प्रभु उपासना एवं सदा महान बनने का चिन्तन करना ब्रह्मचर्य है और आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना ही अपरिग्रह है। हमारी दृष्टि में इन यमों को व्यवहारिक रूप देने से व्यक्ति और समाज की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। इसीलिए महर्षि ने इन्हें सार्वभौमिक महाव्रत कहा है। इनके कार्यान्वयन से व्यक्ति व संसार के समस्त संघर्ष समाप्त हो सकते हैं और सामाजिक समरसता का सृजन किया जा सकता है। आश्रम और वर्ण व्यवस्था के द्वारा भी सामाजिक समरसता को प्राप्त किया जा सकता है। हमारे ऋषियों ने व्यक्ति की औसत आयु सौ वर्ष मानकर उसे ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम के रूप में विभाजित किया है। पहले 25 वर्षों में व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति करके शिक्षा-दीक्षित होता था। गुरूकुलों में उसे समस्त ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता था तथा साथ ही सामान्य व्यवहार और नैतिकता की बातें बताई जाती थी। उसका जीवन सात्विक एवं पवित्रता से परिपूर्ण रहता था। उसके बाद वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। यह आश्रम भोग-स्थली नहीं थी बल्कि इस आश्रम को इसलिए श्रेष्ठ कहा गया क्योंकि यह आश्रम शेष सभी आश्रमों का भी आधार था। यही वह आश्रम है जहां से समाज को अच्छे और सुसंस्कृत नागरिक दिए जाते थे। इस आश्रम में 25 वर्ष रहकर वह वानप्रस्थी होकर पूर्णरूप से सामाजिक कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता था। वानप्रस्थी के ऊपर समाज को सही दिशा देने का बहुत बड़ा दायित्व होता था। वह भी कैसा युग था जब बड़े से बड़ा चक्रवर्ती सम्राट् भी सब-कुछ त्यागकर जंगलों का रास्ता पकड़ता था। हमारे नगर व ग्राम योग्यतम तथा अनुभवी वानप्रस्थियों से घिरे रहते थे। वानप्रस्थी अपने अनुभवों के आधार पर ब्रह्मचारियों और गृहस्थों का मार्गदर्शन करते थे। यहां भी 25 वर्ष रहकर वह सन्यासी बनकर संसार का उपकार करने के लिए निकल जाता था तथा इस जीवन को धन्य करता हुआ परमात्मा की उपासना करके मोक्षगामी बनता था। जीवन की पूर्णता प्राप्त करने के लिए तथा सामाजिक समरसता करने के लिए इन आश्रमों का निर्वहन किया जाना चाहिए। इसी में जीवन की पूर्णता समझी जानी अपेक्षित है। यह आश्रम व्यवस्था सामाजिक सुव्यवस्था तथा समरसता का बहुत ही सुन्दर उपाय था। इसी प्रकर हमारे मनीषियों ने सामाजिक सुव्यवस्था के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण बनाए। समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को ब्राह्मण, शारीरिक शक्तिसम्पन्न को क्षत्रिय, व्यापारिक बुद्धि रखने वाले को वैश्य और जिसमें ये योग्यताएं न हों लेकिन कला-कौशलादि तथा सेवाकार्य में प्रवीण हो उसे शूद्र कहा जाता था। यह भी एक अति-उत्तम सामाजिक सुव्यवस्था थी मगर आज कुत्सित राजनीति के कारण इस वर्णव्यवस्था को बहुत ही विकृत रूप दे दिया गया है। योग्यता के आधार पर समाज के प्रत्येक वर्ग का मुख्यधारा में समावेश किया गया था। वर्ण-व्यवस्था के कार्यान्वयन से धन की शक्ति को बहुत कम कर दिया गया था जिससे भ्रष्टाचार और अत्याचार पर अंकुश रहता था। आज धन की शक्ति बहुत बढ़ गई है इसलिए व्यक्ति रातों-रात धनवान बनने के लिए भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबा हुआ है। ब्रह्मचारी धन नहीं कमाता था, वानप्रस्थी धन नहीं कमाता था और न ही सन्यासी धन कमाता था। केवल गृहस्थी ही धन कमाकर शेष आश्रमवासियों की भी पालना करता था। गृहस्थियों में भी केवल वैश्य ही धन कमाता था। ब्राह्मण, क्षत्रिय और शूद्र की पालना भी यह वैश्य ही किया करता था। अब रही प्रतिष्ठा की बात, सो धन तो वैश्य कमाता था मगर समाज में उससे अधिक ब्राह्मण का सम्मान होता था। आश्रम में भी गृहस्थी से अधिक सन्यासी का सम्मान होता था। सन्यासी के चरणस्पर्श करने तथा आदर-सम्मान करने के लिए चक्रवर्ती सम्राट् भी अपने सिंहासन से नीचे उतर जाता था। इस प्रकार धन की नहीं बल्कि विद्वता की पूजा होती थी। यही हमारी सामाजिक उन्नति और समरसता का प्रमुख आधार था। जिस रामराज्य को आज भी एक आदर्श-राज्य के रूप में स्मरण किया जाता है, उसमें ऐसी ही व्यवस्था थी।❖

गोरक्षा, देश-रक्षा

– डॉ. सतीश चंद्र मित्तल

भारत में प्राचीनकाल से ही गोरक्षा और गोसेवा को बहुत महत्व दिया गया है। महाराजा रघु, भगवान श्रीकृष्ण, छत्रपति शिवाजी ने गोरक्षा को अपने शासन का मुख्य अंग माना। सन् 1857 के महासमर का एक प्रमुख मुद्दा गाय की चर्बी का नई राइफल की गोलियों में प्रयोग ही था। बहादुरशाह जफर ने भी तीन बार गोहत्या पर प्रतिबंध की घोषणा कर हिन्दू समाज की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया था। कूका आंदोलन का केंद्रबिंदु गोरक्षा ही था। इस संदर्भ में महात्मा गांधी का कथन महत्वपर्ण है। उन्होंने कहा था, 'मैं गाय की पूजा करता हूं। यदि समस्त संसार इसकी पूजा का विरोध करे तो भी मैं गाय को पूजूंगा..... गाय जन्म देने वाली मां से भी बड़ी है। हमारा मानना है कि वह लाखों व्यक्तियों की मां है।' उन्होंने यह भी कहा, 'गोवध बंद न होने पर स्वराज्य का महत्व नहीं रहता, जिस दिन भारत स्वतंत्र होगा, सब बूचड़खाने बंद कर दिये जाएंगे।'

भारत में गोहत्या

भारत में विधिवत बूचड़खाने खोलकर गोहत्या हत्या का क्रम सन् 1760 ई. में क्लाइव के शासनकाल से शुरू हुआ। सन् 1760 में पहला बूचड़खाना खुला, जिसमें कई हजार गायें नित्य काटी जाने लगीं। सन् 1910 ई. में देश में बूचड़खाने बढ़कर 350 हो गए। सन् 1947 में स्वतंत्रता के बाद इनकी संख्या बढ़कर वैध-अवैध कुल मिलाकर 36000 हो गई। एक अनुमान के अनुसार नित्य लगभग एक लाख गोधन काटा जा रहा है। दुर्भाग्य से गाय के मांस का भारी मात्रा में निर्यात आर्थिक आय का एक प्रमुख साधन माना जाने लगा है। इतना ही नहीं गाय के मांस को स्वाद तथा कीमतों की दृष्टि से 18 भागों में बांटा गया है। गाय के पीठ के भाग को, जिसे शिरोन कहते हैं, सबसे अधिक स्वादिष्ट तथा मंहगा बताकर बेचा जाता है।

गोहत्या रोकने के प्रयत्न

गोहत्या रोकने के संदर्भ में सर्वप्रथम अनुकरणीय प्रयत्न किया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने। सन् 1952 में गोपाष्टमी से गोहत्या बंदी आंदोलन चलाया गया, लेकिन शर्मनाक ढंग से पं. नेहरू ने इसे एक राजनीतिक चाल कहा। इसके बावजूद अनेक मुसलमानों, ईसाईयों तथा यहूदियों ने हस्ताक्षर अभियान में सहयोग दिया। केवल चार सप्ताह की अवधि में पौने दो करोड़ लोगों से गोहत्या बंदी के समर्थन में हस्ताक्षर करवा कर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद को भेंट किए गए। देश के अनेक संतो, ऋषियों, जैन मुनियों ने इसमें पूरा सहयोग किया। साथ ही गोहत्या बंदी के लिए केंद्र को संविधान में संशोधन कर कानून बनाने का भी आग्रह किया गया। बाद में बंगाल तथा केरल को छोड़कर सभी प्रांतों में गोहत्या बंदी कानून भी बनाए गए लेकिन राजनीतिक हितों का ध्यान रखते हुए न केंद्र सरकार द्वारा कोई कानून बनाया गया और न ही प्रांतों में गोमांस के निर्यात अथवा गोहत्या को रोकने का कोई दबाव बनाया। इतना ही नहीं, कुछ वामपंथी लेखकों ने गोहत्या के समर्थन में वेदों के प्रमाण तक गढ़ डाले तथा सही अर्थों को समझे बिना इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में उन्हें जबरदस्ती शामिल करवा दिया। निष्कर्ष यही निकलता है कि गाय की रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिए। भारत की अर्थव्यवस्था, सामाजिक चिंतन तथा संस्कृति का विकास इसके बिना संभव नहीं है। गोहत्या रोकने के लिए केंद्र सरकार द्वारा कानून के उल्लंघन पर उत्तरदायी व्यक्ति तथा अधिकारी को कठोर सजा दी जानी चाहिए। गोहत्या को नर हत्या ही नहीं, बल्कि देश की हत्या मानना चाहिए। **साभारः पान्चजन्य**

कृषि को समृद्ध करती गाय

गाय हमारी संस्कृति में माता के रूप में मान्य है। माता का स्थान स्वर्ग से भी महान है। माता शिशु का पालन पोषण करते हुए अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए सुयोग्य एवं संस्कारवान नागरिकों का निर्माण करती है परंतु गाय उससे भी बढ़कर बालक के पालन पोषण में सहयोग देते हुए उसे धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से गुरूत्तर एवं स्वावलम्बी बनाती है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में गाय को महत्ता दी जाती रही है व गाय के सुरभि रूप का भी वर्णन मिलता है। बाल-गोपाल, गोविन्द आदि नाम कृष्ण के गायों के सम्मान के प्रतीक रूप में ही है। संसार में जहां स्वर्ग लोक की कल्पना की गई है वहां गाय को सुरभि नाम से संबोधित करते हुए उनके स्वर्गिक निवास को गोलोक की संज्ञा दी गई है। गायों के दूध में अमृत जैसे गुणों का प्राचुर्य मिलता है। प्रायोगिक रूप से देखने में आया है कि स्वदेशी गायें जो कुछ भी खाती हैं, उसका प्रभाव उनके गले तक ही रहता है और दूध उनसे अछूता अमृत तुल्य बना रहता है। यहीं नहीं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी गाय मानव जीवन में महत्वपूर्ण योगदान देती है। गायों से पंचगव्य की प्राप्ति होती है। इसमें दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर की प्राप्ति है। दूध, दही और घी जहां एक ओर मानव स्वास्थ्य की वृद्धि, आरोग्य, मानसिक उन्नयन और बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी रहता है वहां गोमूत्र से अनेक प्रकार की दवाइयां और कीटनाशकों का निर्माण होता है। जो चिकित्सीय पद्धति और फसल संरक्षण के लिए उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय के गोबर से घर आंगन की लिपाई करने से हानिकारक कीट पतंगों से सुरक्षा होती है। गोबर कृषि फसलों के विकास और वृद्धि के काम आता है। इससे भूमि की उर्वराशक्ति भी बढ़ती है। वर्तमान में संसाधन के रूप में भी गायों का पर्याप्त योगदान है। गायों का गोबर गैर पारंपरिक ऊर्जा का एक अक्षय स्त्रोत है। पेट्रोल, डीजल, कोयला जैसे संसाधन व्यय साध्य और समाप्ति की ओर बढ़ रहे हैं वहां दूसरी ओर उनसे नि:सृत कार्बन डाइऑक्साइड जैसी जहरीली गैसें वायुमंडल को प्रदूषित कर मानव अस्तित्व के लिए खतरा बनी हुई है। गोबर से ऊर्जा रूप में प्राप्त गैस न केवल सस्ती और सुलभ रहेगी वरन् इससे बिजली उत्पन्न करने से न केवल 14 करोड़ लीटर का ईंधन व्यय बचेगा वरन् इससे पांच करोड़ टन कार्बन उत्सर्जन भी रूकेगा। साथ ही कच्चे तेल पर व्यय होने वाले आठ सौ करोड़ रूपयों की भी बचत होगी। इसी दृष्टि से उत्तराखण्ड के नैनीताल जिले में हल्दू चौक नित्यानंद आश्रम में संचालित गौशाला में लगभग 300 गायों का पालन पोषण होता है। उनसे पंचगव्य की प्राप्ति के अतिरिक्त गोबर और गोमूत्र के संयंत्र लगाकर पंद्रह किलोवाट बिजली पैदा की जाती है। गोबर से पानी और आश्रम के चूल्हों को ऊर्जा तथा बिजली मिलती है। गोबर संयंत्र के अवशिष्ट भाग को कृषि में खाद के रूप में प्रयोग किया जाता है तथा इस संयंत्र से उत्पादित बिजली का कुछ भाग बेचकर आमदनी के स्त्रोत के रूप में भी काम आता है। गोबर की जैविक खाद से कृषि उत्पादन तो बढ़ता ही है। रासायनिक खादों पर व्यय होने वाली धनराशि की भी बचत होती है और कृषि जिन्सों के दुष्प्रभावित होने से मुक्ति मिलती है। इससे मानव को शुद्ध हानि रहित भोजन की प्राप्ति होती है। कृषि कार्य में अपेक्षित आवागमन के लिए गउएं एक महत्वपूर्ण संसाधन का काम करती हैं। खेतों की जुताई, बुआई, सिंचाई

दूध, दही और घी जहां एक ओर मानव स्वास्थ्य की वृद्धि, आरोग्य, मानसिक उन्नयन और बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी रहता है वहां गोमूत्र से अनेक प्रकार की दवाइयां और कीटनाशकों का निर्माण होता है। जो चिकित्सीय पद्धति और फसल संरक्षण के लिए उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय के गोबर से घर आंगन की लिपाई करने से हानिकारक कीट पतंगों से सुरक्षा होती है। गोबर कृषि फसलों के विकास और वृद्धि के काम आता है। इससे भूमि की उर्वराशक्ति भी बढ़ती है। वर्तमान में संसाधन के रूप में भी गायों का पर्याप्त योगदान है।

निराई आदि में गायों से प्राप्त बैलों की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। फसलों तथा अनाजों को घर, बाजार आदि में लाने और ले जाने में बैल जैसे संसाधन सुलभ और सस्ते रहते हैं जबकि ट्रैक्टर, हार्वेस्टर जैसी मशीनें और संसाधन सहज सुलभ नहीं रहते। महंगे होने के कारण ये प्रत्येक किसान की सामर्थ्य से बाहर रहते हैं। अत: गायों से प्राप्त बैल अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस प्रकार गाय भारतीय कृषि का अभिन्न अंग है।❖

वैज्ञानिकों के योग्य गोसेवा कार्य

वैज्ञानिक वर्तमान जीवन शैली के निर्माता है। आज विज्ञान ने मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया है। वैज्ञानिक आधुनिक ऋषि हैं, जो मानवमात्र के कल्याण हेतु लगातार तप श्चर्या (अनुसंधानों) में लीन हैं। गोसेवा, गोसंवर्धन की अवधारणा पूर्णत: वैज्ञानिक अवधारणा है, अत: वैज्ञानिक गोमाता से सीधे संबंधित हैं। महान वैज्ञानिक आईंस्टीन का मत था कि कोई वैज्ञानिक नास्तिक हो सकता है यह कल्पना से परे है। गोमाता इन ऋषियों की ओर अश्रुभरी आंखों से आशा लगाए देख रही है। वैज्ञानिक गोवंश एवं गोसंवर्धन के अपनु पुनीत कर्तव्यों की पूर्ति निम्न अन्वेषण बिंदुओं को ध्यान में रखकर कर सकते हैं:-

* गोवंश संवर्धन के विभिन्न आयामों पर सतत अनुसंधान किए जावें।
* भारतीय नस्ल के गोवां को अधिक उन्नत बनाने से संबंधित अनुसंधान किए जावें।
* ऋतु अनुसार गोवंश को दिए जाने वाले आहार की गुणवता सुधार के अनुसंधान हों।
* जैविक कृषि- खाद, कीटनाशक, गोबर गैस जैसे विषयों पर अनुसंधान हों।
* गोबर गैस निर्माण व वितरण से संबंधित अनुसंधान हो।
* यांत्रिक कृषि उपकरणों की बजाय बैल चालित उपकरणों के आविष्कार व वर्तमान उपकरणों के परिष्कार का कार्य सतत चले। जैसे बैल पम्प इत्यादि।
* पंचगव्य उत्पादों तथा औषधियों को अधिक से अधिक कारगर बनाने की दृष्टि से अनुसंधान कार्य हो।
* किसानों को जैविक कृषि से लाभ व रासायनिक व यांत्रिक कृषि से होने का पक्ष समझाने हेतु पूरे देश में प्रषिक्षण कार्यक्रम आयोजित हों। कुशल वैज्ञानिक इन्हें संचालित करें।
* विश्व में भारतीय नस्ल की गांय सर्वश्रेष्ठ है, यह अनुभव में आया है इसे सिद्ध करें। गोपर्वो, गो उत्सवों में भाग लेंवे। गोशाला जावें।
* अग्निहोत्र पर अनुसंधान करें।
* भारतीय उन्नत नस्ल के नंदी (सांड) का वीर्य संग्रहित करने व संरक्षित करने की प्रक्रिया को सरलीकृत व सर्वसुलभ बनाएं।
* प्राचीन ग्रंथों में वर्णित पंचगव्य महिमा का अध्ययन कर वर्तमान में शोध द्वारा उसको प्रमाणित करें।
* पंचगव्य की चिकित्सकीय उपयोगिता पर शोध के साथ ही असाध्य रोगों के निदान में इसके उपयोग हेतु शोध करें।
* गोबर के बहुआयामी उपयोग की दिशा में शोध करें, जैसे- अगरबत्ती, समिधा, मच्छर निरोध बत्ती, टाइल्स, फिनाइल आदि अन्य उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।

साभार: कामधेनु कल्याण

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

दूरभाष पर सम्पर्क करें।

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

गो-आधरित उद्योग
गोमूत्र द्वारा फिनायल

गोमूत्र द्वारा फिनायल तैयार किया गया है जो कि कई अनुसंधानशालाओं में टेस्ट भी हो चुका है। वर्तमान समय में उपलब्ध जितने भी फिनायल हैं उनसे यह अच्छा है, कमजोर नहीं है। 5 रू. किलो में हम गोमूत्र खरीद कर भी बनावें तब भी फायदे का है। एक गाय जो 10 लीटर पानी पीती है 5-6 लीटर तो गोमूत्र देगी ही। वह यदि एकत्रित कर लें तो गाय स्वयं में स्वावलम्बी हो जाती है, जहां तक फिनायल की खपत का सवाल है सर्वविदित है गोमूत्र स्वयं कीटनिरोधक है इसलिए इसका असर फिनायल के रूप में जीवाणु रहित वातावरण करने में बहुत अच्छा है। बहुत सारे विभागों में इसकी आवश्यकता है।

10 लीटर फिनायल के लिए सामग्री

क्र.	द्रव्य का नाम	मात्रा
1	राजन	2 किलो
2	अरण्डीतेल	250 ग्रा.
3	क्रेजुएट आयल	3 लीटर
4	कार्बोलिक एसिड	50 ग्राम
5	एम.सी.पी.	50 ग्राम
6	कास्टिक	50 ग्राम
7	गोमूत्र	4 लीटर
8	पानी	3 लीटर

गोमूत्र द्वारा पेस्टीसाइड (कीट निरोधक)

विभिन्न उपलब्ध पेड़-पौधों की पत्तियों का सम्मिश्रण करके तैयार किया गया। पेस्टीसाइड अनुसंधानशालाओं में टेस्ट में सही उतरा है तथा परिणाम में जहां-जहां प्रयोग हुए हैं जहां केमिकल पेस्टीसाइड से फसलें बरबाद हुई हैं वहीं गोमूत्र कीट निरोधक से फसलों में आश्चर्यजनक परिणाम मिले हैं। केमिकल पेस्टीसाइड सारे रोगों की जड़ हो रहे हैं तथा वैज्ञानिकों का मत है कि स्वास्थ्य के लिए सबसे हानिकारक केमिकल पेस्टीसाइड है।

10 लीटर पेस्टीसाइड के लिए सामग्री

1	गोमूत्र	12 लीटर
2	नीम पत्ती	2 कि.ग्रा.
3	धतूरा फल	10 नग
4	तम्बाकू	100 ग्राम
5	नीमतेल	500 मि.ली.
6	लहसुन	50 ग्राम
7	हरसिंगार पत्ती	100 ग्राम
8	भटकटइया	100 ग्राम

गाय के गोबर से साबुन

गोबर, मुल्तानी मिट्टी तथा थोड़ा चन्दन पाउडर मिलाकर साबुन तैयार किया जाता है जो हर प्रकार के चर्मरोगों के लिए बहुत अच्छा है। गांवों में आज भी गर्मी बरसात के मौसम में बच्चों के फुंसियां, फोड़े आदि पर माताएं, मुल्तानी मिट्टी का लेपन करती है जिससे उनके जलन कम हो जाती है तथा ठीक भी हो जाती है, गोबर साथ मिला होने से समस्त चर्मरोगों में फायदा करती है।

100 किलोग्राम साबुन के लिए सामग्री

1	नारियल तेल	45 लीटर
2	महुआ तेल	25 लीटर
3	राइसब्रान तेल	20 लीटर
4	नीम तेल	5 लीटर
5	कास्टिक	13 किलोग्राम
6	गोघृत	2 किलोग्राम
7	दही	2 किलोग्राम
8	गोदुग्ध	2 किलोग्राम
9	गोमयरस	2 किलोग्राम
10	गोमूत्र	2 किलोग्राम
11	सुगन्ध	1 किलोग्राम
12	रंग	आवश्यकतानुसार

इसी प्रकार गोमूत्र से उबटन, दंत मंजन, शैम्पू, मच्छर निरोधक क्वायल, धूपबती, डिस्टेम्पर आदि उत्पादों का उत्पादन व प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा रहा है। ❖

इतिहास लेखन में लोकगाथाओं का योगदान

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, दिल्ली द्वारा

प्रायोजित 'इतिहास लेखन में लोक गाथाओं का योगदान' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का शुभारंभ आश्विन कृष्ण 5, कलियुगाब्द 5117, विक्रमी संवत् 2072, तदनुसार 2 अक्तूबर, 2015 को हुआ। इस परिसंवाद में आसाम, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के 87 से अधिकाधिक विषय मर्मज्ञ विद्वानों ने भाग लिया। त्रिदिवसीय परिसंवाद के कालक्रम को 12 सत्रों में विभाजित किया गया था जिसमें 63 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

2 अक्तूबर, 2015 को सायं 2.30 बजे परिसंवाद का उद्घाटन सत्र हुआ। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् दिल्ली के निदेशक डॉ. वाई.एस. राव उपस्थित थे। सत्र की अध्यक्षता डॉ. सतीश मितल ने की और इसके विशिष्ट अतिथि इतिहास संकलन समिति के अखिल भारतीय सगठन मंत्री डॉ. बालमुकुन्द थे। इस सत्र में विषय के मर्मज्ञ विद्वान डॉ वेद अग्नि ने 'बीज भाषण' प्रस्तुत किया। बीज भाषण में ही त्रिदिवसीय परिसंवाद के विभिन्न विषयों के पक्ष उद्घाटित किए गए, जिन पर चर्चा होनी अपेक्षित थी। तकनीकी सत्र में 7 शोध पत्र पढ़े गए और उन पर गंभीर चर्चा हुई। सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया। इस संध्या में हिमाचल की लोकगाथाओं का गायन हुआ। गाथाओं में बिलासपुर जनपद की प्रसिद्ध गाथा मोहणा, मण्डी का बसोआ और चम्बा का मुसादा गायन सब को मन्त्रमुग्ध करने वाला था। इसमें डॉ. लाल चन्द, डॉ. हेम राज, दयालू राम और जयादेई देवी ने गाथाओं का प्रस्तुतिकरण किया।

श्रद्धेय ठाकुर रामसिंह की स्मृति में शोध संस्थान द्वारा प्रारम्भ किए गए युवा इतिहासकार सम्मान से सम्बन्धित तकनीकी सत्र का शुभारम्भ हुआ। इस सत्र में कुल 5 शोध पत्र युवा शोधार्थियों ने प्रस्तुत किए। पांचों शोध पत्रों का चयन समिति ने गहन विश्लेषण करके सर्वसम्मति से श्री विवेक शर्मा का चयन युवा इतिहासकार सम्मान के लिए किया।❖

विजयादशमी उत्सव के अवसर पर प्रदेश भर में शस्त्र-पूजन एवं पथ-संचलन

प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर विजयादशमी के अवसर पर स्वयंसेवकों के द्वारा शस्त्र-पूजन एवं पथ संचलन के कार्यक्रम किये गये। प्रदेश के सभी जिला केन्द्रों पर इस वर्ष भव्य कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बनाई गई थी। जिसमें शिमला, सोलन, दाड़लाघाट, मण्डी, सुन्दरनगर, बिलासपुर, हमीरपुर, उना, नाहन, नालागढ़ एवं कांगड़ा में शस्त्र-पूजन एवं भव्य पथ-संचलन के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

कुल्लू में दशहरे के अवसर पर प्रतिवर्ष निकलने वाले संचलन में इस वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के आमंत्रित सदस्य श्री मधुभाई कुलकर्णी ने शस्त्र-पूजन कर सभी स्वयंसेवकों को शस्त्र-पूजन एवं भव्य पथ संचलन प्रस्तुत करने के लिए विजयादशमी की बधाई दी। अपने संबोधन में उन्होंने स्वयंसेवकों से वर्तमान परिस्थिति में एकरस समाज निर्मिति के लिए एकात्मता एवं समरसता का भाव जागृत करने में सहयोग पर विशेष बल दिया। इस अवसर पर सह-विभाग संघचालक श्री नेसूराम, जिला संघचालक श्री राजीव करीर, प्रांत प्रचारक श्री संजीवन कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे।❖

विश्व संवाद केन्द्र शिमला कार्यालय उद्घाटन

शिमला के रिज स्थित पी.सी. चैम्बर में दिनांक 20.10.2015 को विश्व संवाद केन्द्र, हिमाचल प्रदेश के प्रांतीय

कार्यालय का उद्घाटन विधिवत् रूप से हवन-यज्ञ के पश्चात् श्री नरेन्द्र ठाकुर उत्तर क्षेत्र प्रचार प्रमुख राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर कमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर संवाद केन्द्र की वर्तमान समय में आवश्यकता तथा उसके क्रिया-कलापों के विषय में श्री नरेन्द्र ठाकुर ने प्रकाश डाला। समाज में घटने वाली घटनाओं की सटीक जानकारी एवं चित्रण, राष्टीय महत्व के समाचारों से प्रदेश एवं सम्पूर्ण देश के संवाद केन्द्रों को अवगत करवाना, मीडिया के मध्य संवाद सेतु एवं राष्ट्रीय विचारों के प्रसार के लिए एक संवाद संस्था के रूप में कार्य करना विश्व संवाद केन्द्र के कार्यों में से प्रमुख हैं। इस अवसर पर शिमला नगर के विभिन्न इलैक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया से जुड़े पत्रकार बन्धु एवं नगर के गणमान्य विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में विश्व संवाद केन्द्र शिमला के संयोजक श्री दलेल सिंह ठाकुर ने उपस्थित सभी महानुभावों का आभार व्यक्त किया।❖

सामाजिक समरसता पर शिमला में आयोजित गोष्ठी

सामाजिक समरसता विषय पर डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला में आयोजित गोष्ठी के उपलक्ष्य में राष्टीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के आमंत्रित सदस्य मधु भाई कुलकर्णी ने अपने विचार व्यक्त किये। एकरस समाज निर्मिति के लिए उन्होंने मातृशक्ति की प्रशंसा की तथा आहवान किया कि जिस तरह पिछले कई वर्षों से संघ अस्पृश्यता निवारण के लिए कटिबद्ध है। उसी प्रकार जन-जन की भागीदारी से सब कुछ संभव हो सकता है। सामाजिक समरसता का भाव स्वयं एवं परिवार से प्रारम्भ कर शेष समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। परन्तु समाज जीवन के सभी प्रेरणा स्रोतों के कठोर परिश्रम से लगता है कि अपने देश में समरसता कायम हो पाएगी। समरसता के भी कई प्रकार बताए गए जैसे आर्थिक समरसता, राजनीतिक समरसता, व्यवहारिक समरसता एवं वैचारिक समरसता। संघ के एक देश, एक जन, एक संस्कृति के विचार से समाज में समरसता को प्रभावी बनाया जा सकता है। कहीं-कहीं पर देखने में आता है कि श्मशान घाट भी पृथक हैं, पानी भरने के स्थान भी पृथक हैं। लेकिन संघ ने सम्पूर्ण देश में इस भेदभाव को दूर करने का संकल्प लिया है तथा इसका प्रभावी समाधान के लिए आप सबसे भी यह अपेक्षा है। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न वर्गों की महिलाओं ने भी समरसता के उपर अपने विचार एवं सुझाव रखे तथा एकरस समाज निर्मिति के लिए संघ द्वारा किए जाने वाले प्रयासों का प्रयासपूर्वक सहयोग देने का सभी ने संकल्प लिया। इस कार्यक्रम में शिमला नगर व जिले के ग्रामीण अंचलों से भी मातृशक्ति की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। ❖

उत्तर- 1. बिलासपुर, 2. राजा सैनी, 3. श्री गुरुगोविन्द सिंह, 4. आसफवली, 5. सीमा ठाकुर, 6. 12 7. महारानी नागा देवी, 8. क्रान्तिकारियों के कार्यकलापों में सहयोग से, 9. पंजाब, 10. भारतीय किसान संघ

स्वच्छता के लिए सभी का हो एकजुट प्रयास - मुख्य न्यायाधीश

शिमला नगर की स्वच्छता व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए सभी को मिलजुल कर प्रयास करने चाहिए। मुख्य न्यायाधीश मंसूर अहमद मीर ने यह बात शिमला के ऐतिहासिक रिज मैदान पर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण व पर्यावरण, विज्ञान एवं तकनीकी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्वच्छ शिमला अभियान के शुभारंभ अवसर पर कही। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों की स्वच्छता जागरूकता रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि शिमला नगर की अपनी ऐतिहासिक गरिमा है जिसे बनाए रखने के लिए इस नगर को और स्वच्छ बनाना अत्यंत आवश्यक है। इस अभियान में शिमला नगर के लगभग 35 शैक्षणिक संस्थानों के 1000 बच्चों ने भाग लिया। इसके अलावा प्राधिकरण द्वारा आज उच्च न्यायालय परिसर में प्रदेश के विभिन्न भागों से आए 110 बच्चों के लिए स्वच्छता विषय पर नारा, चित्रकला व निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया उन्होंने कहा कि प्रदेश राज्य विधिक साक्षरता शिविर के माध्यम से न्यायिक प्रक्रिया से संबंधित जानकारी प्रदान कर जागरूक किया जा रहा है। सदस्य सचिव राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण यशवंत सिंह चोगल ने इस अवसर पर कहा कि प्राधिकरण के माध्यम से वर्ष 2014-15 में 5 लाख 50 हजार बच्चों के सहयोग से 5 लाख 92 हजार पौधे रोपित किए गए। इस वर्ष 1 लाख 70 हजार पौधे लगाए जा चुके हैं। ❖

हिमाचल हाईकोर्ट का निर्देश गोहत्या रोकने का बने कानून

हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को आदेश दिए हैं कि वह गाय को काटने पर रोक लगाने हेतु कानून बनाए। प्रदेश हाई कोर्ट ने इस बाबत केंद्र सरकार को तीन माह का समय दिया है। न्यायाधीश राजीव शर्मा व न्यायाधीश सुरेश्वर ठाकुर को खंडपीठ ने अपने निर्णय में यह स्पष्ट किया कि भारतीय संविधान सभी धर्मों को एक समान आदर करने की गारंटी देता है। धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान का मूल आधार है। किसी भी व्यक्ति को हमारे देश का संविधान इस बात की अनुमति नहीं देता कि वह किसी के धर्म से जुड़ी भावनाओं को आघात पहुंचाया जाए।

न्यायालय ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 का उल्लेख करते हुए यह स्पष्ट किया कि गउओं, बैलों, बछड़ों के मांस का आयात व निर्यात करने की कानून अनुमति नहीं दे सकता। इसके अलावा न्यायालय ने केंद्र सरकार को यह निर्देश दिए कि वह राज्य सरकार को आवारा पशुओं के रख-रखाव व उनके चारे के लिए उपयुक्त धन का हस्तांतरण करें। उनके संरक्षण के लिए तीन महीनों के भीतर उपरोक्त दोनों निर्देशें बाबत केंद्र सरकार के संबंधित सचिव को अनुपालना शपथ पत्र न्यायालय के समक्ष दायर करने के आदेश जारी किए हैं। इसके अलावा हाई कोर्ट ने अपने पिछले आदेशों की अनुपालना न होने पर जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के आदेश जारी किए हैं। ❖

प्रदेश में बढ़ती गौ-तस्करी की घटनाएं

प्रदेश के सराहन और सिरमौर में बढ़ती गौ-तस्करी चिंता का विषय बनी है। हिमाचल गौ-तस्करों का अड्डा बन गया प्रतीत होता है। इसका जिक्र स्वयं डीआईजी ने सराहन में

स्वीकार किया है कि बॉर्डर से लगते हुए क्षेत्रों में गौ तस्करी हो रही है। केवल गौ-तस्करी ही नहीं शांत प्रदेश को ऐसे लोग जो गौ-तस्करी और अन्य घटनाओं मे सम्मिलत हैं वे हथियारों व अन्य सामग्रियों की भी तस्करी करते होंगे। इतनी बड़ी घटना के बाद विहिप की मा. मुख्यमंत्री जो गौरक्षक हैं और हिन्दू हृदय सम्राट हैं से मांग है कि प्रशासन हिमाचल के धर्मपरायण लोगों पर दोषारोपण न करे। सम्मिलित गौ-तस्कर पर मिरजापुर (सहारनपुर) थाने में धारा 307 का मुकदमा दर्ज है। अनेक घटनाओं में वह संलिप्त है। जो अन्य चार लोग हैं, उन पर हरियाणा (नारायणगढ़), पंजाब में अनेक मुकदमे गौ-तस्करी के रूप में दर्ज हैं। आज हिमाचल उच्च न्यायालय ने निर्णय देकर हिमाचल को गौरवान्वित किया है कि गौ-तस्करी या मृत्यु पर वही प्रावधान होगा जो एक इंसान की हत्या पर है। प्रशासन किसी दबाव में आकर कोई कार्यवाही न करे जिससे प्रदेश का माहौल खराब हो। इस विषय की गहराई तक जाकर गौरक्षकों को सम्मानित किया जाए न कि प्रताड़ित। उन्होंने मा. उच्च न्यायालय के आदेशों की पालना किया है, कोई अपराध नहीं किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि स्थानीय पुलिस और स्थानीय मेडिकल ऐड देने वाले लोग ही इसके लिए जिम्मेदार हैं, जिन्होंने कथित गौ-तस्कर को नाहन या पीजीआई या आईजीएमसी के लिए रेफर नहीं किया। इसमे संदेह लगता है कि यह लापरवाही पुलिस प्रशासन और स्थानीय अस्पताल प्रशासन की है गौरक्षक की नहीं। ❖

देव पूजा के समय जानने योग्य बातें

– भीम सिंह

- सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु ये पंचदेव कहे गए हैं। इनकी पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिए।
- सर्वकल्याण चाहने वाले गृहस्थ को एक ही मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए। पंचदेवों की पूजा करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो सूर्य, तीन दुर्गा मूर्ति और दो शालिग्राम रखना हितकर नहीं है।
- शालिग्राम की प्राण प्रतिष्ठा नहीं होती है।
- पत्थर, काष्ठ (लकड़ी) स्वर्ण या अन्य धातुओं की मूर्ति-प्रतिष्ठा घर या मंदिर में करनी चाहिए।
- घर में चल प्रतिष्ठा और मंदिर में अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिए।
- गंगा जी में, शालिग्राम शिला में तथा शिवलिंग में सभी देवताओं का पूजन बिना आह्वान विसर्जन किया जा सकता है।
- स्नान करने के बाद ही तुलसी व विल्वपत्र तोड़ने चाहिए।
- तुलसी का एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियों के साथ अग्रभग को तोड़ना चाहिए। तुलसी की मंजरी सब फूलों से बढ़कर मानी गई है।
- देवताओं को स्नान कराकर अंगुठे से न मलकर किसी शुद्ध वस्त्र से पोंछना चाहिए।
- पत्र-पुष्प तथा फल का मुख नीचे की तरफ करके नहीं चढ़ाना चाहिए। अपितु जैसे उत्पन्न होते हैं, वैसे ही चढ़ाना चाहिए। परन्तु विल्वपत्र उल्टा करके चढ़ाना चाहिए।
- कुशा के अग्रभाग से देवताओं पर जल नहीं छिड़कना चाहिए।
- विष्णु भगवान को चावल, गणेश जी को तुलसी, दुर्गा जी को दूर्वा और सूर्य नारायण को विल्वपत्र नहीं चढ़ाने चाहिए।
- धोती में रखा हुआ तथा जल में डुबाया हुआ पुष्प मलिन हो जाता है। अत: देवताओं पर नहीं चढ़ाना चाहिए।
- गणेश जी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र-पुष्प प्रिय हैं। इन्हें सफेद या हरी दूर्वा अवश्य चढ़ानी चाहिए।
- जितने भी लाल रंग के फूल हैं, वह सभी देवी देवताओं को अभीष्ट हैं। सुगंधित समस्त श्वेतफूल भगवती को विशेष प्रिय है। ❖

नाबालिग मुस्लिम लड़की का निकाह गैरकानूनी

गुजरात हाई कोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में नाबालिग मुस्लिम लड़की के निकाह को पूरी तरह गैरकानूनी करार दिया है। न्यायाधीश जे.बी. पारडीवाला ने अपने निर्णय में कहा कि नाबालिग मुस्लिम लड़की की शादी के मामले में मुस्लिम पर्सनल लॉ नहीं, बल्कि चाइल्ड मैरिज एक्ट का प्रावधान लागू होगा। अदालत ने कहा कि जो लोग पर्सनल लॉ के नाम पर कम उम्र में निकाह को जायज ठहराते हैं, वे समाज को गर्त में ले जा रहे हैं। दुनियाभर में लगातार सामाजिक और आर्थिक हालात बदल रहे हैं। पारिवारिक ढांचों में शिक्षा से बदलाव आया है। इससे बाल विवाह खुद भूतकाल बन जाने वाला है। मुस्लिम समुदाय को भी कम उम्र में लड़कियों की शादी के दुष्परिणाम का पता चल गया है। जस्टिस पारडीवाला ने कहा कि कम उम्र में शादी को बढ़ावा देने वाले लोगों पर भी बाल विवाह निषेध अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया जाएगा। गायकवाड़ हवेली पुलिस थाने में दिसंबर 2014 में 28 वर्षीय यूनुस शेख पर पड़ोस की किशोरी को भगाकर ले जाने का मामला दर्ज हुआ था। युवक ने भगाने से पहले इस 16 वर्षीय किशोरी से निकाह कर लिया था। इस पर लड़की के पिता ने शेख के खिलाफ मामला दर्ज कराया। दूसरी तरफ, शेख का कहना था कि यह मामला मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत आता है। शरिया कानून 15 साल की लड़की को अपनी शादी के बारे में निर्णय लेने का अधिकार देता है। लेकिन अदालत ने उसकी दलीलों को खारिज कर दिया।❖ **साभार दैनिक जागरण**

पीओके में बगावत

पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी: लोगों ने कहा, हमें भारत जाना है

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में भारी संख्या में लागों ने विकास नहीं होने का आरोप लगाते हुए आजादी, रोजगार और मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराने की मांग की। मुजफ्फराबाद, गिलगित और कोटली सहित कई इलाकों में भारी विरोध-प्रदर्शन के बाद तनाव का माहौल है। सीमा पार से आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले पाकिस्तान का चेहरा अब दुनिया के सामने आ चुका है। प्रदर्शन कर रहे लोगों का कहना है कि पाकिस्तान की ओर से उन पर जुल्म किए जाते हैं। उनके मानवाधिकारों का हनन होता है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि न तो उनका विकास हो रहा है और न ही युवाओं के पास रोजगार है। युवाओं के पास आगे बढ़ने का कोई रास्ता भी नहीं है। पाकिस्तान उन्हें भारत के खिलाफ इस्तेमाल करना चाहता है। हम भारत जाना चाहते हैं। रिपोर्ट के अनुसार पीओके के युवक जेहाद या आतंकी गतिविधियों में शामिल होने से इन्कार कर रहे हैं। इसके चलते आईएसआई उन्हें जबरदस्ती उठा ले जाती है और फिर यातनाएं देती है। इसका विरोध किए जाने पर पाकिस्तान की ओर से सख्ती की जाती है और बर्बर रवैया अपनाया जाता है। इससे विरोध भड़क रहा है। लोगों का कहना है कि उन्हें परेशान करने का पाक को कोई हक नहीं है। ❖ **साभार दिव्य हिमाचल**

किसानों की मुश्किलें दूर करते व्हाट्स ऐप ग्रुप

देश में इन दिनों कृषि को आगे लाने के लिए कुछ व्हाट्स ऐप ग्रुप सामने आए हैं, ताकि तकनीक की मदद से वे किसानों को लाभ पहुंचा सकें और उपज भी बढ़ा सकें। डिजिटलाइजेशन के दौर में देश के किसान भी अब पीछे नहीं हैं। खुद को आगे लाने के लिए संचार क्रांति से जुड़ गए हैं। ये ग्रुप किसानों को खेती में आने वाली दिक्कतों से बचाने के साथ खेती के नए तरीके भी बता रहे हैं।

इंजीनियरिंग के बाद खेती– इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के बाद खेत में रमने वाले अनिल बांडवाने ने भी इस साल की शुरूआत में 'बलीराजा' नाम का एक व्हाट्स ऐप ग्रुप बनाया। बलीराजा महाराष्ट्र में अनाज के राजा को कहा जाता है और किसान ही अनाज के राजा होते हैं। अब तक हमने 10 ग्रुप बना लिए हैं और हर ग्रुप में करीब 100 लोग हैं। वो बताते हैं कि उनके साथ महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, ओडिशा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के किसान भी जुड़े हैं। ग्रुप में कई विशेषज्ञ भी मौजूद हैं। ये ग्रुप नए तरीके की खेती की भी जानकारी देते हैं। अब विदेशी सब्जियां, जैसे ब्रॉकली, जुकिनी आदि भी उगाने के तरीके बताए जा रहे हैं।

पंजाब– पंजाब के युवाओं को खेती में छुपी संभावनाओं से जोड़ने के लिए अमरीक सिंह ने 'पंजाबी यंग इनोवेटिव फारमर्स एंड एग्रीप्रेन्योर्स' नाम का व्हाट्स ऐप ग्रुप बनाया है। गुरूदासपुर के एडीओ (कृषि विकास अधिकारी) अमरीक सिंह कहते हैं कि पंजाब की जमीन खेती के लिहाज से बहुत अच्छी है। लेकिन इसके बाद भी युवा पीढ़ी विदेशों की ओर जा रही है। इसके अलावा वे यह भी बताते हैं कि कृषि विभाग में भी जरूरत से कम लोगों को रखा गया है। इस समस्या से निकलने के लिए उन्होंने व्हाट्स ऐप ग्रुप के बारे में सोचा। अमरीक इस ग्रुप में आज तक तीन सौ लोगों को जोड़ चुके हैं।❖

गोसंवर्धन :दिल्ली हाई कोर्ट में नया मुद्दा 20 साल में खत्म हो जाएंगी देशी गाय

बीफ (खासकर गाय) पर राजनीति खूब हो रही है, लेकिन इसके संरक्षण और इसकी पहचान कैसे होगी ये किसी को नहीं पता है। चौंकाने वाली बात है कि देश में पाए जाने वाले देशी गौवंश में से करीब 80 फीसदी किस नस्ल के हैं यह किसी को भी पता नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2012 तक देश में कुल 19 करोड़ गौवंश थे। इनमें देशी गौवंश की कुल संख्या 15 करोड़ है, जिसमें 2.09 करोड़ गौवंश की ही नस्ल पहचानी जा चुकी है। यानि करीब 80 फीसदी देशी गौवंश (नॉन डिस्क्रिप्ट) की नस्ल ही नहीं पता। यह बात तब सामने आई जब दैनिक भास्कर ने वकील और पर्यावरणविद् अश्विनी कुमार के कोर्ट में लगाए दस्तावेजों को खंगाला। अश्विनी ने गौ वंश की हत्या रोकने और देशी गौवंश के संरक्षण के लिए नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में याचिका दायर की है। नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल के निदेशक एके श्रीवास्तव इस मामले पर बात करते हुए कहते हैं कि हां यह सही है कि देश में करीब 80 फीसदी देशी गौवंश के नस्ल की पहचान नहीं हो पाई है। अभी हाल ही में गंगातीरी 39वीं नस्ल पहचानी गई है। अश्विनी कहते हैं कि गाय को किसी धर्म विशेष से जोड़कर देखना गलत है। यदि वर्तमान स्थिति बनी रही तो अगले 30 वर्ष में देशी नस्ल ही खत्म हो जाएगी। देश में सन् 1992 से 2012 तक देशी गौवंश का अनुपात 93 फीसदी से घटकर 79 फीसदी हो गया है। जबकि विदेशी गौवंश का यह अनुपात सात से बढ़कर 21 फीसदी हो गया है। अश्विनी कहते हैं कि अगर विदेशी गायों की संख्या इसी प्रकार बढ़ती रही और गौवंश का घटना जारी रहा तो वर्ष 2025 तक विदेशी गौवंश की संख्या देशी से अधिक हो जाएगी और अगले 20 वर्ष में देशी नस्ल ही समाप्त हो जाएगी। आंध्र प्रदेश–तेलंगाना में पाई जाने वाली पंगलूर नस्ल की देशी गायों की संख्या वर्ष 2007 तक सिर्फ 771 ही रह गई थी। इसलिए इसका संरक्षण पूरे समाज के लिए जरूरी है। विदेशी गाय के द्वारा दिए जाने वाला दूध एन1 किस्म का होता है जिसमें डायबिटीज, हृदय संबंधी रोग होने का खतरा बढ़ जाता है जबकि देशी गाय के दूध में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। बीमारियां भी नहीं होती। ब्राजील, अर्जेंटीना और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश हमारी देशी नस्ल गिर को भारत से ले जाकर पाल रहे हैं। यही नहीं जहां विदेशी गाय अधिकतम छह से सात साल तक दूध देती है वहीं देशी गाय 12 से 13 वर्ष तक दूध देती है।❖

जागो हे भरत!

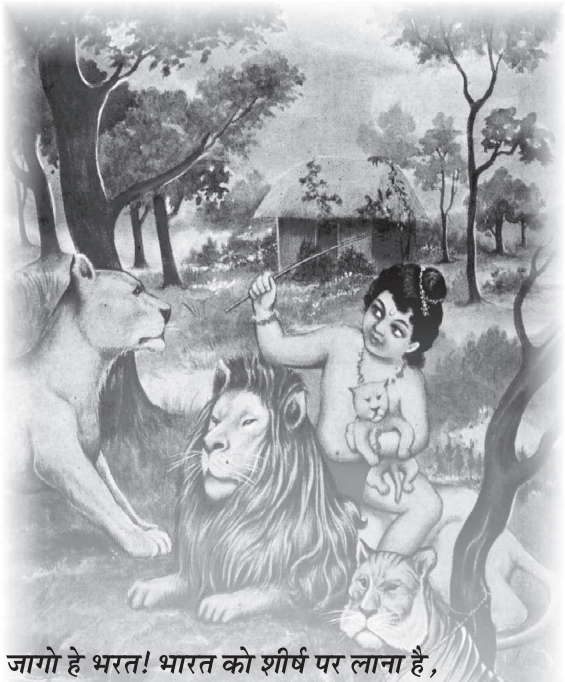

जागो हे भरत! भारत को शीर्ष पर लाना है,
त्यागो निद्रा! अब कुछ करके दिखाना है,
भरत! माँ भारती की आन का सवाल है,
निज पड़ोसी चल रहे कुटिल चाल है,
उग्र भ्रष्टाचार की समस्या विकराल है,
गरीबी के चंगुल में जनता बेहाल है,
भारत को इन सबसे मुक्ति दिलाना है,
जागो भरत! भारत को शीर्ष पर लाना है।।1।।
'अखंड-भारत' हर जन का सपना हो,
राष्ट्रहित में निहित कर्म अपना हो,
राष्ट्र उत्थान के कदमों का न रूकना हो,
आपत्ति बाधा के समक्ष नहीं झुकना हो,
राष्ट्रीय ध्वज हर कोने में लहराना है,
जागो भरत! भारत को शीर्ष पर लाना है।।2।।

मनोज कुमार 'शिव', कांगड़ा

कमरे का आदमी

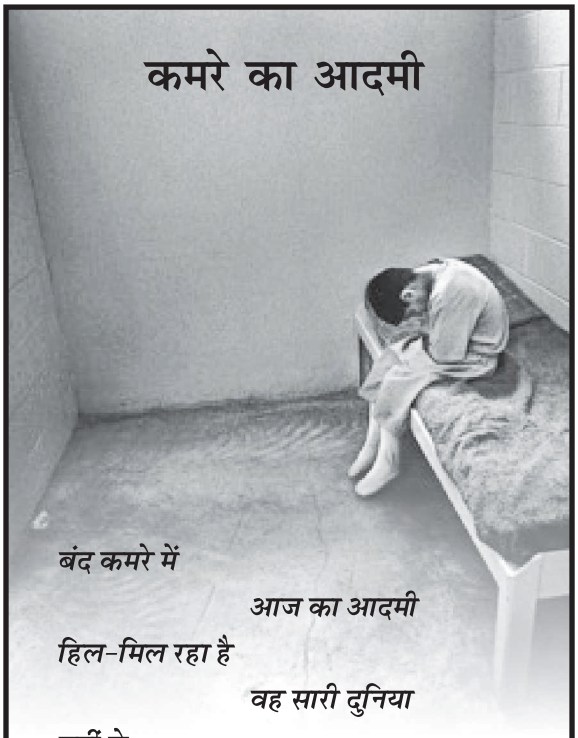

बंद कमरे में
आज का आदमी
हिल-मिल रहा है
वह सारी दुनिया
वहीं से
देख रहा है
किसी को
खबर नहीं
नहीं जानता कोई
कैसा है उसका हुलिया
कैसा है निशान
होगा कैसा इंसान
यह आदमी
बटन दबाने में है
खूब माहिर
दबते बटनों से
निपटते क्रिया-कलाप
बात हुई यह
अब जग जाहिर।

कश्मीर सिंह, तीसा, चम्बा

एकात्म मानव दर्शन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर विशेष

पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा वैश्विक समुदाय को दिये गए दर्शन एकात्म-मानवदर्शन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर गत दिनों पालमपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह, डॉ. कृष्ण गोपाल से प्रवास के मध्य उनकी व्यस्त दिनचर्या में से मातृवन्दना के सह-संपादक श्री जयसिंह द्वारा एक अविस्मरणीय साक्षात्कार का

सौभाग्य प्राप्त हुआ। पत्रिका के पाठकों तक इस विषय को पहुंचाने के लिए मातृवन्दना संस्थान अपना नैतिक दायित्व समझता है। एकात्म-मानव दर्शन को डॉ. कृष्ण गोपाल भली-भांति जानते व समझते हैं तथा वैश्विक समुदाय तक इस दर्शन को पहुंचाने में लगातार प्रयासरत हैं। आशा है कि इस साक्षात्कार से पाठकों को एकात्म-मानव दर्शन से संबंधित विषय की विशेष जानकारी प्राप्त होगी। प्रस्तुत हैं एकात्म मानवदर्शन पर उनसे बातचीत के कुछ अंश:-

जयसिंह -डॉ0 साहब एकात्म मानववाद दर्शन के पचास वर्ष पूर्ण होने पर आपको मातृवन्दना पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाईयां।

डॉ. कृष्ण गोपाल: धन्यवाद। आपको एवं आपके पाठकों को भी मेरी ओर से बधाईयां।

प्रश्न:- एकात्म मानववाद दर्शन क्या हैं?

उत्तर:- सदियों पुरानी सनातन-परंपरा, संस्कृति, विचार एकात्म मानवदर्शन हैं। जैसे मनुष्य का परिवार उसके दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, मामा-मामी से जो संबंध हैं वह एकात्म-मानववाद का ही एक स्वरूप है। अपना गांव, समाज, प्रकृति, जीव-जगत एक साथ मिलकर एकात्म मानव दर्शन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मजदूर, मालिक, उपभोक्ता इन सब के हित आपस में जुडे़ हुए हैं, विद्यार्थी-शिक्षक-अभिभावक इन सब के हित आपस में जुड़े हैं। इसी तरह पूरे विश्व के हित आपस में एक साथ जुड़े हुए हैं। किसी भी भीषण संकट या आपदा के समय पूरा वैश्विक समुदाय एक दूसरे कि सहायता के लिए खड़ा होता है। यही एकात्म-मानववाद का सही अर्थ है।

प्रश्न:- एकात्म-मानववाद दर्शन की वर्तमान समय में क्या प्रासंगिकताएं हैं?

उत्तर:- पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों, जीव-जन्तुओं के जीवन की स्वतंत्रता, सुरक्षा व विश्व-बंधुता के लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एकात्म-मानव दर्शन ही उचित मार्ग है। यह सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण हेतु पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया एक ऐसा दर्शन है जो किसी जाति या संप्रदाय विशेष के लिए नहीं अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। इसलिए वर्तमान में इससे बेहतर दर्शन कोई दूसरा नहीं है।

प्रश्न:- विश्व के किसी देश में यदि आर्थिक मंदी होती है तो ऐसे में एकात्म-मानव दर्शन क्या मार्ग प्रशस्त करता है?

उत्तर: - आर्थिक मंदी भी ये प्रदर्शित करती है कि विश्व एकात्म है। किसी भी देश में संकट के समय प्रत्येक देश से मदद मिलती है। विकसित देशों में उत्पादन

बहुत होता है और खपत कम। संकट उन्ही देशों को है जो अपने उत्पाद को बेचने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहते हैं। जैसे चीन उत्पादन अधिक दृष्टि से करता है। परंतु बिक्री के लिए दूसरे देश पर निर्भर है। जबकि भारत की जनता की मार्केट बहुत स्वावलंबी है। वह मितव्ययता पर अवलंबित है। मितव्यता किसी साधना से कम नहीं। कम खर्च में घर चलाना यह मौलिक विचार इस देश का है। भारत की घरेलू बचत अच्छी है। भारत का प्रत्येक नागरिक 30-35 प्रतिशत बचत करता है। भारत की आर्थिक व्यवस्था अकेली नहीं। पश्चिम में कम कमाओ और अधिक खर्च करो। जबकि भारत में अधिक कमाओ और बचत करते हुए खर्च करो। यहां की नागरिक व्यवस्था एक chain reaction की तरह कार्य करती है। पूर्वजों द्वारा कमाई गई सम्पत्ति को उसके वंशज हमेशा संभालकर रखते हैं। जबकि पश्चिम में ऐसा नहीं है।

प्रश्नः- स्वदेशी और एकात्म-मानव दर्शन में क्या समानता और भिन्नता है?

उत्तरः- एकात्म मानव दर्शन स्वयं में स्वदेशी है। स्वदेशी कोई वस्तु ही नहीं बल्कि स्वदेशी एक विचार भी है और दर्शन भी। इसी देश की भूमि पर इस देश के लोगों द्वारा दिया गया एक दर्शन है। अपने देश के लोगों की प्रकृति, सामान व देश को ध्यान में रखकर दैनिक उपयोग की वस्तुओं का उपयोग करना ही स्वदेशी का विचार है। दूसरे देश का जो भी सामान अच्छा हो परन्तु योग्य नहीं। इसलिए हमें इसपर दृढ़तापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है

प्रश्नः- भारत की आर्थिक स्थिति पर एक पुस्तक है 'सुमंगलम' क्या यह पुस्तक एकात्म मानव दर्शन पर आधारित है?

उत्तरः- यह भारतीय विचार है। सुमंगलम यानि सबका मंगल करने वाला। आर्थिक व्यवस्था अकेली नहीं है उसके पीछे एक विचार, संस्कार, जीवन-दर्शन, जीवन-पद्धति व जीवन-दृष्टि है। कमाते हैं व सबके लिए संभाल कर रखते हैं। यही भारतीय व्यवस्था है। उसे हम कभी अकेले उपयोग नहीं करते। उससे सबका मंगल हो यही सुमंगलम है।

प्रश्नः- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने के लिए पं दीनदयाल उपाध्याय के क्या विचार हैं?

उत्तर :- गांव के आसपास जो भी सुविधाएं हैं उनका सही उपयोग करना। गांव के लोग अपनी योग्यता के अनुसार जो भी छोटे-छोटे उद्योग लगाकर गांव की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है। आज के समय में हम गांव के लोगों को कार्य नहीं दे रहे हैं, इसलिए वो अपना कार्य छोड़ने पर मजबूर हो गए। भारत में दूध का निर्यात अभी भी बड़े पैमाने पर बाहर से होता है। यह उत्पादन तो भारत में भी हो सकता है। किसानों को एक व दो लाख रू लोन यदि हम कम ब्याज पर उपलब्ध करवाते हैं तो वे अपना रोजगार बड़ी आसानी से चला सकते हैं। भारत में बड़ी मात्रा में माईक्रो लेबल के उद्योग हम आज लगा सकते हैं। सेब, मुरब्बा, आचार और अन्य कई प्रकार के फल से सम्बन्धित उद्योग आज हिमाचल में स्थापित हो सकते हैं।

प्रश्नः- 'Integral Humanism' पर पं दीनदयाल उपाध्याय बड़ा जोर देते हैं यह क्या है?

उत्तरः- लोकमन परिष्कार- आचार्य, शिक्षक, लेखक, कवि, कलाकार, सम्पादक, अध्यापक ये सभी वर्ग non political होने चाहिए। इन सभी वर्गों को अपना कार्य स्वतंत्र व स्वनियमन से करना चाहिए। यह हमारी संस्कृति का आधार है और बहुत उपयोगी है। जिस कार्य को करने के लिए आपकी अन्तर्आत्मा न माने उस पर हमें विचार करना चाहिए।❖

गिलोय प्रकृति का अमूल्य तोहफा

प्रकृति ने हमें बहुत से उपहार दिए हैं। उसने हमें फल, फल, सब्जियां, और न जाने कितनी प्रकार की जड़ी-बूटियां प्रदान की है, जो इंसान की सेहत के लिए अत्यंत लाभदायक हैं। इन्हीं में शामिल है बहुगुणीय गिलोय। गिलोय को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है। जैसे- अमृतबेल, गुडुची, दिन्नरूहा आदि। गिलोय एक औषधि है, जिसके प्रयोग से शरीर के अनेक कष्ट और बीमारियां दूर होती हैं। गिलोय शरीर के त्रिदोष कफ, वात और पित्त को संतुलित करती है। गिलोय को उल्टी, बेहोशी, कफ, पीलिया, धातु विकार, सिफलिस, एलर्जी सहित अन्य त्वचा विकार, चर्म रोग, झाइयां, झुर्रियां, कमजोरी, गले के संक्रमण, खांसी-जुकाम, ज्वर, टाइफाइड, मलेरिया, डेंगू, पेट के कृमि, पेट के रोग, सीने में जकड़न, जोड़ों में दर्द, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय दुर्बलता, क्षय रोग (टीबी), लीवर, किडनी, मूत्र रोग, मधुमेह, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक, गैस आदि को दूर करने के लिए खूब प्रयोग किया जाता है। गिलोय के उपयोग यहीं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि और भी रोगों में गिलोय का प्रयोग बहुत लाभदायक है। आईये बताते हैं आपको गिलोय रूपी अमृत के बारे में।

रक्त कैंसर होने पर गिलोय का रस और गेहूं के ज्वारे के रस को एक कप पानी में बराबर मात्रा में मिलाकर खाली पेट सेवन करने से कैंसर में भी लाभ मिलता है।

गिलोय, गेहूं के ज्वारे का रस, तुलसी और नीम के 5-7 पत्ते पीसकर सेवन करने से कैंसर में भी लाभ मिलता है।

क्षय रोग में गिलोय सत्व, इलायची और वंशलोचन को शहद के साथ लेने से धीरे-धीरे लाभ मिलता है।

मिर्गी का दौरा पड़ता हो तो गिलोय और पुनर्नवा का काढ़ा बनाकर रोजाना सेवन करने से कुछ दिनों में ही मिर्गी के दौरे पड़ने बंद हो जाते हैं।

पीलिया होने पर गलोय के काढ़े में शहद मिलाकर दिन में 3-4 बार पीने से पीलिया रोग ठीक हो जाता है। गिलोय के पत्तों को पीसकर एक गिलास मट्ठे में मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से भी पीलिया ठीक होता है।

बांझपन से मुक्ति के लिए गिलोय और अश्वगंधा को दूध में पकाकर नियमित खिलाने से बांझपन से मुक्ति मिलती है। कान में दर्द हो तो गिलोय के रस को गुनगुना कर दोनों कानों में दिन में 2 बार डालने से कान के दर्द से राहत मिलती है।

गिलोय की डंडी के छोटे टुकड़े करें, उसे दो गिलास पानी में उबालें, जब पानी आधा रह जाए तो इस काढ़े को ठंडा कर रोगी को पिलाएं। इसके इस्तेमाल से मात्र 45 मिनट बाद ही ब्लड सेल्स बढ़ने शुरू हो जाएंगे।

डेंगू, मलेरिया होने पर गिलोय का काढ़ा बनाकर पिलाने से रोगी को राहत मिलती है और ब्लड सेल्स में इजाफा होता है। प्रतिदिन सुबह-शाम गिलोय का रस घी में मिलाकर शहद या मिश्री के साथ सेवन करने से शरीर में खून की कमी दूर होती है।

गिलोय के चूर्ण को शहद के साथ खाने से कफ और सोंठ के साथ सेवन करने से आमवात से संबंधित रोगों में फायदा होता है। मट्ठे के साथ गिलोय के चूर्ण का सुबह-शाम सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है।

एक गिलास पानी में गिलोय के 6 तनों को कुचल कर उसमें 4-5 तुलसी की पत्तियां और तीन चम्मच एलोवेरा का गूदा मिलाकर इसका काढ़ा बनाकर नियमित रूप से सेवन करते रहने से जीवनपर्यन्त कोई बीमारी पास नहीं फटकती।

उच्च कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने के लिए, शरीर में शर्करा के स्तर को संतुलित बनाए रखने के लिए भी गिलोय काफी मददगार है। ❖

महिला सशक्तिकरण में कुटुम्ब श्री योजना का अनोखा योगदान

सुदूर दक्षिण में स्थित भारत का केरल राज्य कुछ मामलों में सभी अन्य राज्यों से अलग है। यह सौन्दर्य एवं हरीतिमापूर्ण छटा से परिपूर्ण राज्यों में भी अग्रणी है। इस राज्य में खाड़ी देशों से सबसे अधिक विदेशी मुद्रा मनीआर्डर (अब ऑनलाइन ट्रान्सफर) के रूप में आता है जिसमें केरल की महिलाओं का सबसे अधिक योगदान है। केरल की नर्सों के कार्य को देश एवं विदेश में भी प्रशंसित किया जाता है। केरल भारत का ऐसा राज्य है जहां विकासलक्षित अनेक प्रयोग लागू किए जा रहे हैं लेकिन सिक्के के दूसरे पहलू के रूप में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में गरीबी भी कम नहीं है। बेरोजगारी के अभिशाप से केरल भी अन्य राज्यों की तरह ही जूझता रहा। ऐसे में आशा की किरण ही नहीं बल्कि सूरज के स्वरूप थ्रिस्सूर जिले में सन् 1998 के वर्ष में कुटुम्बश्री नामक एक राज्य सरकार द्वारा प्रेरित परियोजना का उदय होता है। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के सान्निध्य में मई 17, सन् 1998 को इस महिला स्वयं सहायता समूह का बीजारोपण हुआ जो आज एक विशाल वटवृक्ष के रूप में अपनी जड़ों को पूरे राज्य में पसार चुका है। एशिया के इस सबसे बड़े स्वयं सहायता समूह में संप्रति 37 लाख महिला सदस्य हैं जो आज गरीबी के दुष्चक्र से या तो बाहर आ चुकी हैं अथवा छुटकारा पाने को प्रयासरत हैं। कुटुम्बश्री की चमत्कारित सफलता से प्रेरणा लेकर देश के अनेक राज्य इसी से मिलता जुलता कार्यक्रम चला रहे हैं जिसमें से एक गुजरात राज्य 'मिशन मंगलम्' नामक परियोजना के माध्यम से गुजरात की गरीब तबके की महिलाओं की संस्था सखी मंडलों को नए नाम धरती धन समितियों के द्वारा लाभ पहुंचाने में जी-जान से लगा हुआ है। हजारों अबला कही जाने वाली स्त्रियों को सबल नारी का रूप देने वाली इस परियोजना की सफलता की कहानी हजारों-लाखों में है तथा चमत्कारिक कर देने वाले अनेकों उदाहरण प्रतिदिन सामने आ रहे हैं। ऐसी ही एक सफलता के नए सोपानों को पार करने वाली एक ऐसी महिला की है जिसका नाम है- बिन्दु! बिन्दु की प्रेरणादायक कहानी की शुरूआत सन् 1998 में थ्रिसुर के एक छोटे से गांव मुल्लासेरी से होती है। अठ्ठारह वर्ष की उम्र में विवाह बिन्दु के लिए एक गरीबी के अंधकूप से निकल कर दूसरे में गिरने से ज्यादा कुछ नहीं था। दो बच्चों की बीमारी का सितम अलग से। ऐसे में कुटुम्ब श्री ने सन् 1998 में उसके घर के पास एक स्वयं सहायता समूह की शुरूआत की। बिन्दु बताती हैं कि समूह का सदस्य बनने के लिए उसके पास 10 रूपए जुटाने के भी लाले थे। बिन्दु की तरह ही अन्य सदस्यों का भी यही हाल था। फिर हर सप्ताह जमा करने हेतु पुनः 10 रूपयों की व्यवस्था एक टेढ़ी खीर थी। जैसे-तैस इन महिलाओं ने अपनी सदस्यता को जिंदा रखा। बिन्दु एवं सखियों ने अपने सफर की शुरूआत कृषि कार्य से करने का फैसला किया। बिन्दु बताती है कि उसका एवं उसके समूह का किसान के रूप में काम करना एक अनायास घटना थी। बिन्दु एवं अन्य महिलाओं शीबा, श्रीजा और मल्लिका ने काफी सोच-विचार कर स्वयं अपना ही हाथ आजमाने की योजना बनाई। सबने आपस में विचार कर 8 एकड़ जमीन लीज पर लेने और उसमें धान की खेती करने का फैसला किया।

नए सफर की शुरूआत का पहला कदमः **इन** महिलाओं ने कृषि भवन से रियायती दर पर धान के बीज खरीदे। लेकिन खेती से जुड़े अन्य खर्चों के लिए चारों सखियों ने अपनी जमा पूंजी से खेती के लिए खाद, कीटकनाशक सिंचाई आदि का प्रबंध किया एवं खुद ही परिश्रम करके पहली फसल लेने की शुरूआत की। धान की पैदाइश काफी अच्छी रही और सभी खर्चों को निकालने के बाद जो बचत हुई उससे अगली फसल के लिए कार्यशील पूंजी का बड़ा भाग तैयार हो गया। इस सफलता ने समूह की इन महिलाओं के हौंसले बढ़ा दिए और अब शुरूआत हुई और बड़े पैमाने पर खेती करने की। समूह ने

शेष अगले पृष्ठ पर....

संस्कृत वदाम

सप्तम सोपानम्

1. वार्तालापः वाक्यानि (चलचित्रम्-फिल्म)

अद्यत्वे शोभनं चलचित्रं किम् अस्ति?

– आजकल अच्छी फिल्म कौन सी है?

शोभनं न किमपि, सर्वं सामान्यमेव।

– अच्छी कोई नहीं, सारी एक जैसी हैं।

मित्र! चलचित्र – गृहे तु महान् सम्मर्द : आसीत् इतिश्रूयते।

– मित्र! सुना है, सिनेमाघर में बहुत भीड़भाड़ थी।

तस्मिन् चलचित्रे – गृहे पुरातनं चलचित्रं चलति।

– उस सिनेमा हाल में तो पुरानी फिल्म लगी है।

तत्र तु चिटिका अपिप्राप्तान भविति।

– वहां तो टिकट भी नहीं मिलते हैं।

तहिं समीधीनमेव स्यात्

– तब तो अच्छी हो होगी।

आम् स्यादेव किन्तु करमुक्तम् अस्ति।

– हो सकता है, लेकिन कर मुक्त है।

तर्हि द्रष्टुं चलामः किम्?

– तो देखने चलें क्या?

न हि भो! अहं पूर्वमेव दृष्टवान्।

– नहीं, मैं तो पहले ही देख चुका हूं।

मया सह अपि चलतु भो।

– मेरे साथ भी चलो न।

2. शब्दकोषः (पठन वर्गः)

पुस्तकम्(नपुं.)	–	पुस्तक
कागदम् (नपुं.)	–	कागज
लेखनी (स्त्री.)	–	कलम
पुनःपूरणी (स्त्री.)	–	रिफिल
अङ्किनी (स्त्री.)	–	पेन्सिल
मार्जकः (पु.)	–	रबड़
निर्यासः (पु.)	–	गोद
मापिका (स्त्री.)	–	फुट्टा
वर्ण लेखनी (स्त्री.)	–	स्केच पेन
लेखनाधारः (पु.)	–	क्लिप बोर्ड
सञ्चिका (स्त्री.)	–	फाईल
मसि (स्त्री.)	–	स्याही

3. व्याकरणम् (भविष्यत् काल-लृट् लकारः)

हिन्दी भाषा के भविष्यत्काल वाचक शब्द– गा, गे,गी आदि (क्रियाओं के अन्त में लगने वाले) चिह्न वाली क्रियाओं के साथ संस्कृत में सामान्यतः लृट् लकार का प्रयोग होता है।

उदाहणम्– दिनेश विद्यालय जाएगा– दिनेशः विद्यालयं गमिष्यति।

मैं हसूंगा– अहं हसियामि।

कमला पुस्तक को पढ़ेगी– कमला पुस्तकं पठिष्यति

हम मंदिर में पूजा करेंगे– वयं मंदिरे पूजां करिष्यामः

आप/तुम पत्र लिखोगे– भवान् पत्रं लेखिष्यति

आप सब/ तुम सब शाम को खेलोगे– भवन्तः सायं काले क्रीडष्यन्ति।

हम गुरू को नमस्कार करेंगे– वयं उपाध्यायं नंस्यामः।

पृष्ठ 20 का शेष....

भी जरूरत अनुसार इन्हें हर संभव मदद की। कुछ ही वर्षों में चारों सखियों ने खुद की जमीन खरीदने का बीड़ा उठाया। लीज की जमीन के साथ स्वयं की जमीन पर की जाने वाली खेती से लाभ की मात्रा बढ़ने लगी और बचत राशि से कुछ और जमीन खरीदने की पहल समूह की इन महिलाओं ने की। यहां पर यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि जिस सदस्य की जितनी बचत हुई अपने नाम पर ज्यादा जमीन लेने का प्रयास किया। इनमें बिन्दु बहन सबसे अव्वल निकली और आज वो 22 एकड़ जमीन की मालकिन है और जीवन को सुचारू रूप से जीने के लिए जो भी आवश्यक वस्तुएं होती हैं, आज उसके पास वे सभी उपलब्ध है। कुटुम्ब श्री ने जो ज्योति जगाई है उसका प्रकाश भारत के सभी कोनों में पहुंच रहा है। सबसे संतोष का विषय है कि न केवल बिहार जैसे पिछड़े राज्य इसका फायदा उठा रहे हैं बल्कि उत्तर पूर्व के लगभग सभी राज्य अब इसमें शामिल हो चुके हैं। ❖ **साभारः सहकार सुगंध**

अब सेब पहाड़ का मोहताज नहीं

हिमाचल व पर्वतीय इलाकों की आमदनी का प्रमुख स्त्रोत सेब अब मैदानी इलाकों में भी उत्पन्न होने लगा है। लो चिलिंग प्रजाती के पौधों के कारण, जो बागवानी विभाग ने वर्ष 2012 में फ्रांस से आयात किए थे। इन सेब के पौधों में अन्ना व डोरसेट गोल्डन के करीब दो हजार पौधों का आयात बागवानी विभाग द्वारा किया गया था, जो किसानों व बागवानों में 200 रूपए प्रति पौधा वितरित किया गया था। वर्तमान समय में प्रदेश के कई गर्म इलाकों में लो चिल्लिंग प्रजाति के अन्ना व डोरसेट गोल्डन पौधों में फल आ गया है। इन पौधों को आयात करने का उद्देश्य गर्म इलाकों में भी सेब उत्पादन करना था, जिससे मैदानी इलाकों की आर्थिकी भी सुदृढ़ की जा सके। यह सपना अब अपने साकार स्वरूप को प्राप्त करने लगा है। प्रदेश के कांगड़ा जिला में धर्मशाला के शिला चौक, देहरा के गुम्मर, नूरपुर के भड़वार, जयसिंहपुर के लंबागांव व पालमपुर के नगरी क्षेत्र में उपरोक्त प्रजाति के सेब के पौधों में फल भी आ चुका है। इस संबंध में बागवनी विभाग भी और शोध कर रहा है। मैदानी इलाकों में सेब के पौधों का रखरखाव पहाड़ों से ज्यादा रखना पड़ता है।

यहां होते हैं अन्ना व डोरसेट गोल्डन- लो चिल्लिंग में अन्ना प्रजाति के सेब के पौधे विदेशी हैं। अमेरिका के ब्रह्मस, फ्रांस व अमेरिका के फ्लोरिश में इन पौधों की प्रजाति पाई जाती है।

रख रखाव ज्यादा जरूरी-इस प्रजाति के पौधों ने कई स्थानो पर क्विंटल के हिसाब से फल देना शुरू कर दिया है। लेकिन अभी इनमें और कितनी पैदावार हो सकती है इस पर शोध जारी है। रखरखाव के हिसाब से इनका अधिक ध्यान रखने की आवश्कता है।❖ **-साभार दैनिक जागरण**

रतनज्योत

(जेट्रोफा करकस) के लिए शुष्क तथा अर्द्धशुष्क जलवायु उपयुक्त होती है। सामान्यत: यह पथरीली, रेतीली, बलुई मिट्टी में पाया जाता है। पौधा बहुवर्षीय, हरा-भरा, चिकना, झाड़ीनुमा होता है जिसकी ऊंचाई 3 से 4 मीटर तक होती है। पत्ते तोड़ने से सफेद रंग का दूध निकलता है। सितम्बर से नवम्बर माह तक अच्छे पुष्प आ जाते हैं।

उपयोग- सजावट में बगीचों तथा खेत के चारों ओर चहारदीवारी के रूप में लगाया जाता है। बीजों से प्राप्त तेल साबुन, लुब्रीकेन्ट, मोमबत्ती, प्लास्टिक, सिन्थेटिक फाइवर आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है। औषधि के रूप में दाद, खाज-खुजली, गठिया, लकवा, जख्म भरने, सर्पदंश, दांत-मसूड़ों, पेट सम्बंधी रोगों, बवासीर आदि में इसका वृहद् प्रयोग होता है। भूमि सुधार के लिए रतनज्योत की खली तथा पत्ते उपयुक्त माने जाते हैं। बायोडीजल के उत्पादन में रतनज्योत की खेती की असीम सम्भावनाएं हैं। बीज से प्राप्त तेल से बायो-डीजल का उत्पादन किया जा सकता है।❖

एक लीटर पानी से आजीवन हरा-भरा रहेगा पौधा

राजस्थान के सुंडाराम वर्मा ने शिक्षक बनने की बजाय कृषि के क्षेत्र में नई खोज करने का प्रण किया। उन्होंने एक लीटर पानी से पौधे को आजीवन जीवित रखने की नई खोज की। इस विधि से मिट्टी 0.5 फीसदी से 3 फीसदी तक जल अवशोषित करती है।

राजस्थान के सीकर जिले में गांव दांता के सुंडाराम वर्मा ने अनूठी खोज की जिसमें एक लीटर पानी से आजीवन एक पौधा जीवित रह सकता है। पिछले 25 वर्षों से वे इस कार्य को बखूबी अंजाम दे रहे हैं और अभी तक उनके द्वारा लगाए गए ऐसे पौधों की संख्या 50 हजार पार कर चुकी है। इस खोज के लिए न केवल उन्हें भारत सरकार की विभिन्न कृषि संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया, बल्कि विदेशों में भी उनकी इस खोज को खूब सराहा गया। सुंडाराम वर्मा ने विज्ञान से स्नातक उपाधि प्राप्त की। शिक्षा पूरी करने के बाद दो बार वे शिक्षक पद के लिए चुने गए, लेकिन उन्होंने शिक्षक बनने में दिलचस्पी नहीं ली। वर्ष 1983 में उन्हें राजस्थान की ओर से दिल्ली के पूसा इंस्टीट्यूट में 'फार्मर ट्रेनिंग कोर्स' पर जाने का अवसर मिला। वहां सभी का उन्नत खेती सिखाने पर आग्रह था, लेकिन राजस्थान और वहां सूखे की स्थिति को ध्यान में रखते हुए वर्मा की लगन बिना पानी खेती की जानकारी प्राप्त करने में ज्यादा थी। उन्होंने तब चना, गेंहू, सरसों और जौ यानी कम पानी में होने वाली फसलों की जानकारी ली। उनके दिमाग में यह बात रहती थी कि ऐसी खोज की जाए जिसमें कम पानी की सिंचाई से भी पौधे पनप सकें। उन्होंने दिल्ली में कृषि वैज्ञानिकों से मिलकर उनको अपनी खोज के बारे में बताया जिसे खूब सराहा गया। उन्होंने बताया कि इस विधि से मिट्टी 0.5 फीसद से 3 फीसद तक जल अवशोषित करती है। एक घन मीटर मिट्टी में 80 से 300 लीटर पानी अवशोषित करने की क्षमता होती है। मिट्टी में गया जल खरपतवार और केशिका नली के सिद्धांत (कैपिलरी एक्शन) से बाहर निकलकर वाष्पित हो जाता है। उनके अनुसार 5 से 6 इंच चौड़ा और डेढ़ फुट गहरा गड्ढा खोद कर उसमें पौधे लगाने शुरू किए। उनका मानना था कि पौधा लगाते समय करीब 10 इंच का होता है और ऊपर से 2 इंच मिट्टी दबाने पर वह 12 इंच तक का हो जाता है जिसमें गीली मिट्टी डाली जाती है। पौधा लगाते समय उसमें मात्र एक लीटर पानी डालने की आवश्यकता होती है जिसके बाद जीवन में कभी पानी नहीं डालना पड़ता है। उनके अनुसार जुलाई माह में 'प्री मानसून' और 20 अगस्त के बाद होने वाली मूसलाधार बारिश के तुरंत बाद खेत की जुताई करनी चाहिए। मानसून में बरसात का पानी मिलना ही उसके लिए काफी होता है। उन्होंने सबसे पहले सन् 1983 में कुल 200 पौधे लगाए थे। श्री वर्मा ने राजस्थान की प्रमुख 15 फसलों की 700 से अधिक प्रजातियों को संकलित किया। 400 प्रजातियां नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सिस (एनबीपीजीआर) पूसा, दिल्ली में संरक्षित की गई हैं जिनमें से 197 को पंजीकृत किया जा चुका है। वे राजस्थान में राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान (एनआइएफ) के प्रतिनिधि के रूप में नई-नई खोज करने वाले किसानों को खोज कर उन्हें प्रोत्साहन दे रहे हैं। ❖

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर

गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

भारत की गीता, भारत का योगदर्शन, भारत के तथागत आज विश्वमान्य हो रहे हैं।

– डॉ मोहन भागवत

सुखद संयोग ऐसा है कि भारत में सुशासन का आदर्श प्रस्थापित कर, दक्षिणपूर्व एशिया महाद्वीप में अपनी सनातन भारतीय संस्कृति की मंगलसूचक पताका फहराने वाले राजराजेश्वर राजेन्द्र चोल महाराजा के राज्यारोहण का भी 1000वां वर्ष मनाया जा रहा है तथा जाति, मत, पंथ के भेदों को पूर्णत: नकारकर, रूढियों की बेड़ियों को तोड़कर भक्ति मार्ग को समाज के सभी घटकों के लिये खुला करते हुए, सामाजिक समरसता के जागरण का पुन: प्रवर्तन करने वाले श्री रामानुजाचार्य का 1000वीं जयंती का वर्ष भी अगले वर्ष संपन्न करने की तैयारी समाज में हो रही है। जम्मू-कश्मीर में शैव सिद्धान्त के महान आचार्य अभिनव गुप्त का भी यह 1000वीं जयंतती का वर्ष चल रहा है।

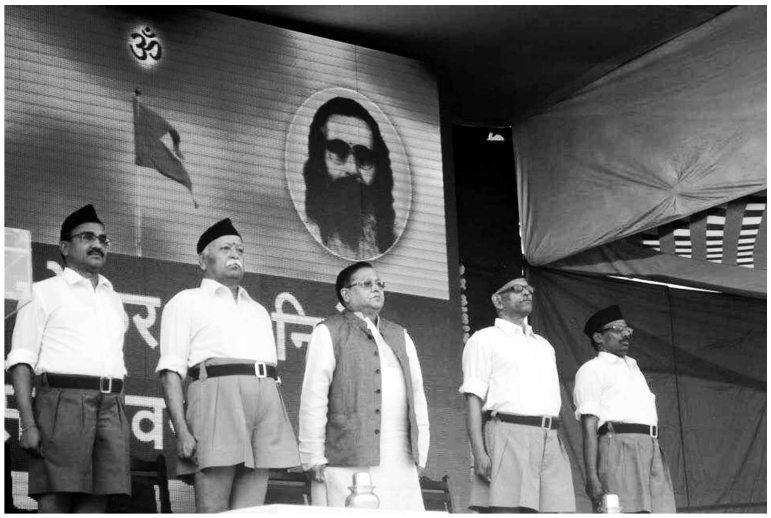

कर्मसु कौशलम् व समत्व के साथ फलाशारहित निरन्तर विभिन्न कर्म करने का संदेश देने वाली श्रीमद्भगवद्गीता का 5151वां वर्ष गीता जयंती तक चलेगा। इन सब संयोगों के स्मरण का कारण यही है कि आज भी हमारे आपके परिवारों से लेकर सम्पूर्ण विश्व की समृद्धि, शांति व उन्नति के लिए हमारा कर्तव्य भी हमें समृद्ध, समर्थ व समरस भारत के निर्माण के लिए आह्वान कर रहा है। संपूर्ण समाज की संगठित शक्ति के आधार पर विजय प्राप्त करने का पथ ही आज का विचारणीय विषय है।

जीवन के सब क्षेत्रों में विजिगीषु वृत्ति के आधार पर स्वावलम्बी, सामर्थ्य संपन्न, वैभव संपन्न, पूर्ण सुरक्षित होकर, संपूर्ण विश्व को मंगलप्रद उत्कर्ष कारक नेतृत्व देने वाला भारत खड़ा करना तब सम्भव होगा, जब समतायुक्त, शोषणमुक्त, गौरव-संपन्न, संगठित व प्रबुद्ध समाज का उद्यम उन नीतियों के समर्थन में चलेगा तथा ऐसे समाज की दृढ़ इच्छाशक्ति प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चलने वाले तंत्र की तथा उसके संवैधानिक चालकों को दिग्दर्शक होगी। इस दृष्टि से जब आज के देश के परिदृश्य का विचार करते हैं, तब एक बहुत ही सुखद व आशास्पद चित्र सामने आता है। दो वर्ष पूर्व में जो निराशा का, अविश्वास का, वातावरण था, वह अब प्राय: लुप्त हो गया है। उस वातावरण का साक्षात् अनुभव देश के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचे तथा अपने स्वयं के अनुभव से अपने व देश के भाग्य परिवर्तन में समाज के विश्वास की मात्रा निरन्तर बढ़ती रहे इसका ध्यान रखना होगा।

पड़ोसी देशों से संबंध अपने देश का हित ध्यान में रखते हुए सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये गए हैं तथा वे सफल परिणाम भी दे रहे हैं। लगता है कि विश्व को आधुनिक भारत का एक अलग नया परिचय मिल रहा है। स्वगौरव तथा आत्मविश्वास से युक्त होकर, सम्पूर्ण विचार, देशहित की रक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में दो टूक अपनी बात कहने वाला, विश्व के किसी भी देश में निर्माण हुए संकट में अपना मित्रतापूर्ण हाथ बढ़ाने वाला, भारत का नया अनोखा रूप धीरे-धीरे आकार लेता देख, विश्व के देश स्तब्ध व नई आशा से आशान्वित हैं। भारत की गीता, भारत का योगदर्शन, भारत के तथागत विश्वमान्य हो रहे हैं। देश के भाग्य परिवर्तन में सब प्रकार की

नीतियों की सफलता सम्पूर्ण समाज के उद्यम, सहयोग क्षमता तथा समझदारी पर निर्भर करती है। आनन्द की बात है कि नीति आयोग के घोषणापत्र में इस दिशा के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं। मुद्रा बैंक, जन-धन योजना, गैस सब्सिडी को छोड़ देने का आह्वान, स्वच्छ भारत अभियान, कौशल विकास, ऐसी कुछ उपयोगी पहल इस दृष्टि से सरकार के द्वारा की गयी हैं। विकास नीतियों के जमीन पर दिखने वाले परिणामों की यथातथ्य जानकारी मिलना तथा विकास में सभी को सहभागी बनाने की दृष्टि से सार्थक संवाद व क्रियान्वयन की गति को बढ़ाने की आवश्यकता लगती है।

समाज का प्रबोधन व प्रशिक्षण उसके लिए अनिवार्य शर्त है। आजकल विकास का विचार करते समय देश की जनसंख्या भी एक विचार का विषय बनता है। हमारे देश की जनसंख्या नियंत्रण नीति विचारपूर्वक बनानी पड़ेगी। जनसंख्या बोझ है या साधन है। दोनों प्रकार से विचार कर देखना चाहिए। 50 वर्षों के पश्चात् हमारे देश के संसाधन तथा व्यवस्थाएं कितने लोगों को पोषण रोजगार व जीवन विषयक अवसर तथा सुविधाएं दे सकेंगे। 50 वर्षों के पश्चात् हमारे देश को सुचारू रूप से चलाने के लिए कितने हाथों की आवश्यकता रहेगी। सन्तान वृद्धि का कष्ट व उनके मन संस्कारित करने का कार्य माताओं को करना पड़ता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गत् 90 वर्षों से देश के भाग्य विधाता हिन्दूसमाज को देश के लिए उद्यम करने योग्य बनाने का अविरत् प्रयत्न कर रहा है। संघ निर्माता डॉ. हेडगेवार ने यह अच्छी तरह समझ लिया था, कि देशहित, राष्ट्रहित, समाजहित के काम किसी को भी ठेके पर नहीं दिए जा सकते। समाज को ही संगठित व योग्य बनकर दीर्घकाल उद्यम करना पड़ता है, तब देश वैभव सम्पन्न बनता है। समाज की यह तैयारी कराने वाले कार्यकर्ताओं को गढ़ने का कार्य ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। संघ की सरल सादगीपूर्ण कार्यपद्धति से तैयार होकर निकले स्वयंसेवकों का कर्तृत्व आज सबके सामने है, वे आज समाज के स्नेह विश्वास के कृतज्ञ भागी हैं, भारत के लिए जगन्मान्यता भी प्राप्त कर रहे हैं।

आईये हम सब इस पवित्र कार्य के सहयोगी बनें, क्योंकि दुनिया को आवश्यक प्रतीत होती हुई नई राह देने वाला भारत बनाने का एकमात्र पथ यही है। भारतीय समाज को अपनी सनातन पहचान के आधार पर दोषरहित व संगठित होना ही पड़ेगा। निःशंक, निर्भय होकर सब प्रकार के भेदों को समाप्त करने वाले व मनुष्य मात्र को वास्तविक स्वतंत्रता देकर उसमें मानवता व बंधुभाव भरने वाले धर्ममूल्यों के अमृत से सिंचित अपने व्यक्तिगत तथा सामूहिक आचरण से मानव समाज को सुख शांति व मुक्ति देनी होगी। यही उपाय है, यही करना है- 'हिन्दू हिन्दू एक रहें, भेदभाव को नहीं सहें, संघर्षों से दुःखी जगत को, मानवता की शिक्षा दें।' ❖

श्री दरबार साहिब में लंगर के लिए जैविक खेती

शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आर्गेनिक खेती की शुरूआत कर दी है। अटारी बॉर्डर के पास गुरूद्वारा सतलानी साहिब की जमीन पर जैविक फसलें उगाई जाएंगी। इनका इस्तेमाल श्री दरबार साहिब के लंगर में किया जाएगा। सात एकड़ जमीन पर पहले दिन गाजर, मूली, पालक, धनिया, चुकंदर, शलगम, मेथी आदि की बिजाई की गई। गौरतलब हो कि इस जमीन पर अभी नाशपाती, अमरूद, किन्नू, आड़ू आदि के बाग हैं। इन पेड़ों के बीच में ही खेती की जाएगी। एसजीपीसी के प्रधान अवतार सिंह मक्कड़ का कहना है, श्री गुरू रामदास लंगर हाल में रोज करीब एक लाख लोग आते हैं। यह पहला मौका है जब कमेटी ने संगत को कीटनाशक और कैमिकल मुक्त फसलों से लंगर उपलब्ध कराने का सिलसिला शुरू किया है। जत्थेदार मक्कड़ ने उद्घाटन के बाद बताया कि कमेटी अन्य सभी गुरूद्वारों से उनकी अपनी पांच-पांच एकड़ जमीन पर कुदरती खेती शुरू करवाएगी। इस खेती का विचार श्री गुरू नानक देव जी के दौर की खेती पर आधारित है, क्योंकि उस दौरान खेती में कोई भी जहरीली वस्तु इस्तेमाल नहीं होती थी। यह सिलसिला सन् 1950 तक जारी रहा मगर बाद में ज्यादा पैदावार लेने के चक्कर में स्थिति बिगड़ गई।❖

विश्व को ईश्वरीय मार्ग दिखाने वाले गुरूनानक देव महाराज

'यदा यदा हि धर्मस्य,
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।''

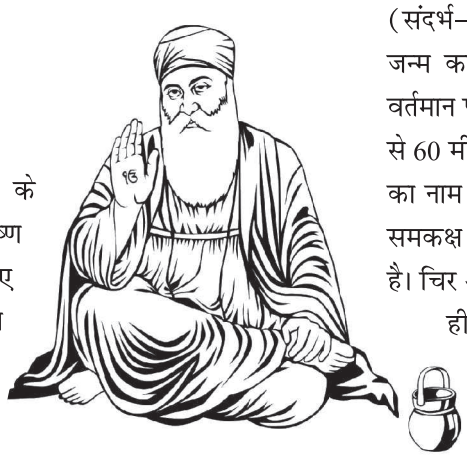

श्रीमद् भागवत गीता के चतुर्थ अध्याय में श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए ज्ञान के लिए उक्त श्लोक चारों युगों के लिए प्रासंगिक है। इसका अर्थ यह है कि जब-जब पृथ्वी पर धर्म की अवमानना होती है, धर्म के अभ्युत्थान के लिए परमात्मा स्वयं को तब-तब सृजित (अवतरित) करता है। यह एक नि:संदिग्ध सत्य है भारतवर्ष की पावन भूमि सदैव संतों, महात्माओं एवं अवतारों की प्रमुख कर्मस्थली रही है। यहां कई संत, महात्मा अवतरित हुए हैं जिन्होंने धर्म से विमुख सामान्य मनुष्य से अध्यात्म की चेतना जागृत कर उसका नाता ईश्वर से जोड़ा है। पृथ्वी से पाप को कम कर पुण्य का संचार किया है। ऐसे ही एक अलौकिक संत गुरूनानक देव महाराज हैं जिनमें हमें साक्षात् ईश्वर की अनुभूति होती हैं। गुरूनानक देव महाराज ने संसार को व्यर्थ के कर्म-कांडों से मुक्त कर परमात्मा का संदेश दिया और इस कलियुग में सतनाम के मंत्र का जाप जपवाया। उनके अनन्य भक्त भाई गुरदास के अनुसार 'सतिगुरू नानक प्रगटिआ, मिटि धुंध जगि चानणु होआ' जैसे सूरज के उदित होने पर सभी तारे छिप जाते हैं वैसे ही गुरूनानक देव के अवतरित होते ही, चहुं ओर ज्ञान का उजियारा हो गया तथा समस्त जीव भ्रामक तत्वों से सचेत होकर प्रभु-भक्ति में लीन हो गए। गुरूनानक देव ने समस्त विश्व का भ्रमण कर सभी को धर्मपालन के प्रति जागृत किया। 'भविष्य पुराण' में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि कलियुग में गुरूनानक देव का अवतार होगा जो मनुष्यों को सद्मार्ग की ओर ले जाएंगे। श्री गुरूग्रंथ साहिब में भी कहा गया है कि गुरूनानक देव सतयुग में वामन अवतार, द्वापर में श्रीकृष्ण त्रेता में रघुवंश के मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम थे और कलियुग में गुरूनानक देव के रूप में अवतरित हुए। (संदर्भ-श्रीगुरू ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 1390) गुरूनानक देव का जन्म कार्तिक पूर्णिमा संवत् 1526 के दिन तलवंडी गांव वर्तमान पश्चिम पाकिस्तान में स्थित नानकाणा साहिब लाहौर से 60 मील दूर हुआ था। उनके पिता का नाम कालूराय, माता का नाम तृप्ता तथा बहन का नाम नानकी था। उस तिथि के समकक्ष दिवस इस वर्ष दिनांक बुधवार, 25 नवम्बर, 2015 है। चिर अमरत्व को प्राप्त गुरूनानक देव केवल एक अवतार ही नहीं वरन् मनुष्यों को सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाले ऐसे दीपक भी हैं, जिनकी ज्योति अनंतकाल तक प्रज्जवलित रहेगी। उन्होंने हर अत्याचार का विरोध किया। अन्यायियों के आध्यात्मिक ज्योति जगाई। हर धर्म, हर सम्प्रदाय का आदर, सम्मान किया। दिग्भ्रमित को सही राह दिखाई। गुरूजी ने किसी भी दुश्मन से दुश्मनी नहीं की बल्कि उसे तर्क संगत सही मार्ग बताया। 'श्री जपुजी साहिब' गुरू नानकदेव महाराज की प्रमुख काव्यमय ज्ञान रचना है जो काव्य रूप में है। उन्होंने सिद्धों का भ्रम दूर करने के लिए श्री जपुजी साहिब में लिखा है 'केते पवण पाणी वैसंतर, केते कान महेस' अर्थात् जिस ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पवन, जल, चंद्रमा आदि के अस्तित्व को आप एक मात्र समझ रहे हैं, वह आपका भ्रम है। सच्चाई यह है कि उस अकाल पुरख परमात्मा ने ऐसे असंख्य शिव, ब्रह्मा, विष्णु, चंद्र, सूरज आदि बनाए हैं। कई शोधों के पश्चात् अब वैज्ञानिकों ने भी उपरोक्त तथ्यों को स्वीकार किया है। 'श्री जपुजी साहिब' का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है- मानसिक और शारीरिक व्याधियों का निवारण। श्री जपुजी साहिब के नियमित पाठ से मानसिक शांति और शारीरिक सुस्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। इस काव्यकृति में कुल 38 पौढ़ियां है। हर पौढ़ी का अपना विशेष महत्व है। तथा पौढ़ी क्रमांक 3 ''गावै के ताणु'' का पाठ करने से परिवार में एकता, व्यापार, व्यवसाय में उन्नति होने के साथ ही सारी कठिनाईयों एवं बुरे समय का अंत होता है। श्री गुरू नानकदेव जी ने सभी के लिए प्रभु का सिमरन करना अति आवश्यक बताया है। प्रभु के सिमरन की शक्ति को दर्शाने वाली कई घटनाओं का हमें

शेष अगले पृष्ठ पर....

दोहरे मापदंडों के चलते 'साम्प्रदायिक सद्भावना' असंभव

– बलबीर पुंज

उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा इलाके के बिसाहड़ा गांव में पिछले दिनों जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुई उसके लिए सभ्य समाज में कोई स्थान नहीं है। गौमांस खाने के आरोप में आक्रोशित भीड़ ने एक समुदाय विशेष के व्यक्ति की जान ले ली, यह निदंनीय कृत्य सर्वधर्म सम्भाव का संदेश देने वाले हिंदू जीवन दर्शन के मूल्यों के विपरीत है। हत्या करने वालों को तो कानून दंड देगा, किंतु इस घटनाक्रम में सैकुलरिस्टों ने जिस तरह राजनीतिक रोटियां सेंकने का कुप्रयास किया उन्हें कौन दंडित करेगा?अपने को प्रगतिशील कहने वाले लेखक भेड़चाल में सम्मान व पदक लौटाकर यह साबित करना चाहते हैं कि आजादी के बाद असहिष्णुता चरम सीमा पर है। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को अतिरंजित कर देश-विदेश में हिंदू समाज की छवि कलंकित करने वाले सैकुलरिस्ट, बुद्धिजीवी और मीडिया के बड़े भाग की भूमिका को कौन परखेगा?मजहबी उन्माद की आग में जलने वाले जब मुस्लिम समाज के भुक्तभोगी हों तब तो भारत के सैकुलर ताने-बाने के भंग होने का संसद से सड़क तक कोहराम मचाया जाता है, किंतु जब मजहबी जुनून में झुलसने वाला हिंदू समुदाय का हो, तब क्यों दोहरे मापदंडों से क्या सामाजिक सौहार्द्र को बचाए रखना संभव है?बिसाहड़ा गांव की 18 हजार की आबादी में मुस्लिमों की आबादी मात्र 300 है। यहां मस्जिद टूटने पर हिंदू चंदा देकर जीर्णोद्धार कराते हैं। एक समुदाय विशेष के व्यक्ति की हत्या के बाद ही गांव वालों को गलती का एहसास हो गया था। किंतु सैकुलरिस्टों ने जानबूझ कर आग में घी डालकर कई दिनों तक दंगे का माहौल बनाए रखा ताकि मुसलमानों की रहनुमाई कर उनके वोट बैंक में सेंधमारी की जा सके। अब बिसाहड़ा में भाईचारा लौट आया है। पिछले दिनों गांव के हिंदुओं ने मिलकर 2 मुस्लिम लड़कियों का निकाह कराया। जिनके वर पक्ष ने बारात लाने से मना कर दिया था। हिंदू दर्शन का यह उदारवाद सैकुलरवादियों की कुत्सित नीतियों का सबसे बड़ा अवरोध है, जो एक समुदाय विशेष में व्याप्त कट्टरवाद के पोषण और संरक्षण में ही अपना अस्तित्व सुरक्षित देखते हैं। किंतु क्या यह संभव है कि केवल हिंदू ही सहिष्णुता का परिचय दें? जम्मू-कश्मीर और महाराष्ट्र में गौवध पर निषेध की बात चलते ही इंटरनैट पर गौकशी के दर्जनों वीडियो अपलोड किए गए हैं किंतु इसकी निंदा नहीं होती। क्यों, वाराणसी से पिछले दिनों गणेश विसर्जन को लेकर साधु-सतों, पर लाठीचार्ज किया गया। उत्तर प्रदेश में प्रशासन जबरन मूर्तियां उठा ले जाता है, मंदिरों से लाऊडस्पीरकर उतारे जाते हैं, पर अजान पर कोई पाबंदी नहीं। सहिष्णुता की अग्नि परीक्षा केवल हिंदुओं से कब तक ली जाएगी?जब कभी भी एक मुस्लिम युवक किसी हिंदू युवती से निकाह करता है तो मुस्लिम समुदाय की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती, इसे बहुत ही आधुनिकवादी सोच के साथ स्वीकार किया जाता है। किंतु जैसे ही कोई मुस्लिम युवती किसी हिंदू से विवाह कर लेती है तो मुस्लिम समुदाय का प्रगतिशील चेहरा जाने कहां गायब हो जाता है, कट्टरपंथियों की फौज सड़कों पर उतर जाती है। उनके समर्थन में फौरन सैकुलरिस्टों का जमावड़ा हो जाता है। स्वयंभू मानवाधिकारी सड़कों पर उतर जाते हैं। ऐसी कुत्सित मानसिकता और दोहरे मापदंडों के रहते सांप्रदायिक सद्भाव कैसे संभव है? ❖

पृष्ठ 26 का शेष.....

उल्लेख मिलता है। एक बार जब गुरूनानक देव शिष्यों सहित विश्व भ्रमण कर रहे थे तब कलियुग ने सेतुबंध रामेश्वर की पावन भूमि पर कई प्रकार के रौद्र रूप धारण कर उन्हें भयभीत करना चाहा। गुरू नानकदेव तो विचलित नहीं हुए, उनके शिष्य बाला, मरदाना अवश्य डर गए। सबसे अधिक भयाक्रांत हुआ उनका प्रिय शिष्य मरदाना। तब श्री गुरू नानकदेव जी ने मरदाने से कहा, ''डरो मत। प्रभु सिमरन करते रहो, यह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।' दोनों शिष्य प्रभु के सिमरन में रत हो गए। जब कलियुग ने देखा कि उनकी भयावहता का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है तो वह अपने वास्तविक रूप में आकर गुरूजी के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।❖

मुस्लिमों के लिए महत्वपूर्ण है गौमाता

गौमांस का सेवन एवं भंडारण करने की अफवाहों के चलते इसे चाहे अपने एक बंधु की भीड़ के हाथों हत्या का मनोवैज्ञानिक सदमा कहें या कुछ और, लेकिन यह सत्य है कि बिसाहड़ा के आसपास के गांवों (खास तौर पर जहां वे अल्पसंख्या में हैं) में रहने वाले मुसलमान खुद को असुरक्षित एवं चिंतित महसूस कर रहे हैं। मजहबी ध्रुवीकरण के चलते अपरोक्ष रूप में मौजूद तनाव के मद्देनजर उनमें से अधिकतर लोगों को यह भय है कि छोटी-सी चिंगारी भी सन् 2013 के मुजफ्फरनगर दंगों की तरह भयावह पुनरावृत्ति के रूप में भड़क सकती है। उनकी चिंताओं की थाह इस तथ्य से भली-भांति पाई जा सकती है कि मुस्लिम बहुल जरचा गांव के मुखिया एहसान इलाही अंसारी ने मुस्लिमों के हिंदू पुरखों की बातें करनी शुरू कर दी है। एक शांति सभा (जिसमें अधिकतर संख्या हिंदुओं की ही थी) को संबोधित करते हुए एहसान इलाही ने कहा, 'हम बाबर की संतान नहीं हैं, हम लोग भी शिवाजी की संतानें हैं।' यह कहते हुए उन्होंने शांति और सौहार्द बनाए रखने की अपील की। उसके बाद श्री इलाही ने विवरण सहित बताया कि उस क्षेत्र में रहने वाले मुस्लिमों के लिए भी 'गौमाता' कितनी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बहुत आवेशपूर्ण ढंग में कहा, 'गौमाता के बिना हम अपने जीवन की परिकल्पना ही नहीं कर सकते। हममें से अधिकतर लोग किसान ही हैं और उनके पास जो कुछ भी है, सब गौमाता की कृपा है।' बहुसंख्य समुदाय का लगभग विश्वस्त कहे जाने वाले एक अंदाज में इलाही ने कहा 'गौ केवल हिंदुओं की ही नहीं, हमारी भी माता है। इस्लाम में गौहत्या करना हराम है।' ये शब्द सुन कर सभा में बैठे कुछ लोगों को जहां घोर आश्चर्य हुआ, वहीं कुछ एक की भौंहें भी तन गईं। आखिर यह पहला मौका था जब किसी मुस्लिम बहुल गांव के मुखिया ने इलाके के मुस्लिमों की हिन्दू पृष्ठभूमि का उल्लेख किया था। फिर भी उनके इन शब्दों को मुख्य रूप में शांति और सद्भावना के संदेश के रूप में ही देखा जा रहा है। **साभार: पंजाब केसरी**

वैज्ञानिकों-इंजीनियरों को अमरीका भेजने में एशिया में भारत सर्वोच्च पर

प्रवासी वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को अमरीका भेजने वाले एशियाई देशों में भारत शीर्ष स्थान पर है। एशिया से अमरीका जाने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की कुल 29.6 लाख की आबादी में से 9.5 लाख लोग अकेले भारत के हैं। नेशनल साइंस फाउंडेशन के नेशनल सेंटर फॉर साइंस एंड इंजीनियरिंग स्टैटिस्टिक्स (एनसीएसईएस) की रिपोर्ट में पाया गया कि वर्ष 2013 के भारत से जुड़े ये आंकड़े वर्ष 2003 की तुलना में 85 प्रतिशत का इजाफा दिखाते हैं। वर्ष 2003 के बाद से फिलिपींस से आने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की संख्या भी 53 प्रतिशत बढ़ी है। वहीं हांगकांग और मकाउ समेत चीन से आने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की संख्या में इजाफा 34 प्रतिशत का रहा है। वर्ष 2003 से 2013 तक, अमरीका में रहने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की संख्या 2.16 करोड़ से बढ़कर 2.90 करोड़ हो गई। इस इजाफे में महत्वपूर्ण बात यह है कि इसी अवधि में प्रवासी वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की संख्या 34 लाख से बढ़कर 52 लाख हो गई। रिपोर्ट के अनुसार, वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग श्रमबल में प्रवासियों की संख्या 16 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत हो गई है। विज्ञान और इंजीनियरिंग कर्मचारी प्रवासियों की सबसे बड़ी संख्या (18 प्रतिशत) कम्प्यूटर एवं गणित विज्ञान में कार्यरत है, जबकि दूसरी बड़ी संख्या (आठ प्रतिशत) इंजीनियरिंग में कार्यरत है। लाइफ साइंटिस्ट, कंप्यूटर एंड मैथेमेटिकल साइंटिस्ट और सोशल एंड रिलेटेड साइंटिस्ट नामक तीन पेशों में वर्ष 2003 से 2013 तक प्रवासियों के लिए रोजगार में पर्याप्त वृद्धि देखने में मिली है। एनसीएसईएस की रिपोर्ट में पेश किए गए आंकड़े वर्ष 2013 की एसईएसटीएटी में लिए गए हैं। यह ऐसा समाकलित डाटा सिस्टम है, जो साइंस एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में पढ़ाई करने वालों और रोजगार करने वालों की समग्र तस्वीर पेश करता है।❖ **साभार: दिव्य हिमाचल**

वीर सावरकर का क्रांति दर्शन

– प्रियंका कौशल

पिछले दिनों आयरलैंड पहुंचने पर भारत के प्रधानमंत्री का स्वागत संस्कृत के श्लोक से हुआ। आयरिश बच्चों के मुंह से संस्कृत श्लोक सुनने के बाद मोदी की पहली टिप्पणी थी कि अगर भारत में ऐसा होता तो सेकुलरिज्म पर सवाल उठ जाता। सबसे पहली बात तो यह है कि, हां यह सच है कि यह टिप्पणी भारत पर ही है, तो इसमें गलत क्या है। विरोधी यह समझ नहीं पा रहे हैं कि नरेन्द्र मोदी ने जो बात संस्कृत को लेकर आयरलैंड की सरजमीं पर कही है, उनके मायने कितने गहरे हैं। आज जिस संस्कृत को पूरा विश्व एक वैज्ञानिक भाषा के तौर पर स्वीकार कर चुका है, उसे पूर्व के इंडिया, दैट इज भारत में हम धर्म विशेष से जोड़कर देखते हैं। हमने कभी अपनी विरासतों पर गर्व नहीं किया। उल्टे सुभाषचंद्र बोस जैसे क्रांतिकारियों की जासूसी करवाई। दूसरी बात यह कि, अपनी विरासत पर गर्व करना सीखना हो तो आयरलैंड से सीखा जा सकता है। आयरलैंड ने भी भारत की तरह लंबे संघर्ष के बाद अंग्रेजों से पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र को प्राप्त किया था, लेकिन उसने कभी उन वीरों को नहीं भुलाया, जिनकी बदौलत वे इस मंजिल तक पहुंचे थे। उस देश ने अपनी विधानसभाओं के पार्श्वभाग की दीर्घाओं में अपने क्रांतिकारी संघर्ष की पूरी कहानी चित्रित करवाई ताकि उनकी स्मृति हर क्षण बनी रहे। साथ ही क्रांति की गाथाएं प्रेरणा देती रहे। आयरलैंड ने कभी अपनी क्रांति को हिंसा कहकर परिभाषित नहीं किया, जैसा कि दुर्भाग्यजनक रूप से तथाकथित नरमपंथियों ने हिंदुस्तान में किया। 15 वर्ष की आयु में अपनी कुलदेवी भगवती दुर्गा के समक्ष स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने का संकल्प लेने वाले वीर विनायक दामोदर सावरकर ने वर्ष 1928 में कहा था कि हमारे बंगलों में थोड़ा बहुत स्वार्थ त्याग करने वाले लोगों की तस्वीरें मिल जाएंगी, किंतु न तो कान्हेरे की तस्वीर मिलेगी न वैद्य की मिलेगी। हिंदुस्तान के हित के लिए दुनिया भर में फैले कितने ही देशभक्तों के एक पन्ने का चरित्र भी उपलब्ध नहीं है। सन् 1928 में कही गई सावरकर की बात सत्य ही तो साबित हो रही है, आज हम देश को स्वतंत्र करवाने वाले कितने वीरों को जानते हैं, केवल उंगलियों में गिने जा सकने वाले नाम ही हमें पता हैं, देश पर न्यौछावर हो जाने वाले असंख्य क्रांतिकारियों के नाम तो हम तक पहुंच ही नहीं पाए। खुद सावरकर ने अभिनव भारत नाम की छोटी सी क्रांतिकारी टोली के माध्यम से मां भारती को परतंत्रता से मुक्ति दिलाने का लंबा अभियान चलाया। अभिनव भारत ने देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी ब्रितानिया हुकूमत की जड़ों को हिलाकर रख दिया। महान राष्ट्रभक्त श्याम जी वर्मा, भाई परमानंद, लाला हरदयाल निरंजन पाल, ज्ञानचंद्र वर्मा, मदनलाल धींगरा, श्रीराम राजू, विष्णु गणेश पिंगले, शचींद्रनाथ सान्याल, जितेंद्रनाथ, मैडम कामा जैसे अनगिनत नाम गुमनामी के अंधेरे में खो गए।

सावरकर कहते हैं कि राजनीति का प्रथम और मूलभूत कर्तव्य स्वदेश की स्वतंत्रता है। मानव, समाज, स्वदेश, परिवार और व्यक्ति, यही है मानवीय कर्तव्यों का तारतम्य। इन चारों कर्तव्यों में स्वदेश के प्रति कर्तव्य सर्वोपरि है। राजनैतिक दृष्टि से पराधीनता के कारण केवल व्यक्ति और परिवार मात्र की हानि नहीं होती है, वस्तुतः इनके कारण मानवीय प्रगति की गति भी अवरूद्ध हो जाती है। यद्यपि सभी देशों की उन्नति का अर्थ है मानवता की उन्नति, यह एक सत्य कथन है, परंतु जब तक कोई देश परतंत्र है तब तक वह मानवीय उत्थान में योगदान क्या देगा?अतएव व्यक्ति, परिवार, समाज तथा मानवता के सर्वांगीण विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति और संरक्षण ही मानव मात्र का प्राथमिक कर्तव्य है।

उन्होंने कभी खुद को महिमा मंडित भी नहीं किया। उनका तो एकमात्र उद्देश्य राष्ट्र की निस्वार्थ सेवा करना था। उसे परतंत्रता की बेडियों से स्वतंत्र कराना था। यह सावरकर का ही निस्वार्थ संकल्प था कि मातृभूमि की स्वतंत्रता के बाद, अंग्रेजो के विरूद्ध सशस्त्र क्रांति का लक्ष्य प्राप्त करने के बाद, वर्ष 1958 में पूना में आयोजित एक विशेष समारोह में अभिनव भारत संस्था का विसर्जन कर दिया गया। थाईलैंड के भिक्षु उत्तम की यह पंक्तियां किसी भी हिंदुस्तानी के हृदय को झकझोरने के लिए काफी है, वह कहते हैं कि वीर सावरकर का जहां क्रांति रूप विख्यात है, वहां उनका एक दूरदर्शी राजनैतिक विचारक का पक्ष भी उतना ही अद्वितीय है। परंतु एक नीतिकार के रूप में उनके महत्व को भ्रमित भारतवासी नहीं समझ पाए। यदि समाज में जीवन शक्ति होती तो उनके नीतिकार रूप को समाज कभी नहीं भुलाता। सावरकर के भीतर के विचारक, दूरद्रष्टा व कविहृदय को हम उनके विचारों से समझ सकते हैं। सावरकर कहते हैं कि राजनीति का प्रथम और मूलभूत कर्तव्य स्वदेश की स्वतंत्रता है। मानव, समाज, स्वदेश, परिवार और व्यक्ति, यही है मानवीय कर्तव्यों का तारतम्य। इन चारों कर्तव्यों में स्वदेश के प्रति कर्तव्य सर्वोपरि है। राजनैतिक दृष्टि से पराधीनता के कारण केवल व्यक्ति और परिवार मात्र की हानि नहीं होती है, वस्तुत: इनके कारण मानवीय प्रगति की गति भी अवरूद्ध हो जाती है। यद्यपि सभी देशों की उन्नति का अर्थ है मानवता की उन्नति, यह एक सत्य कथन है, परंतु जब तक कोई देश परतंत्र है तब तक वह मानवीय उत्थान में योगदान क्या देगा?अतएव व्यक्ति, परिवार, समाज तथा मानवता के सर्वांगीण विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्ति और संरक्षण ही मानव मात्र का प्राथमिक कर्तव्य है। मैजिनी का यह विचार उनके हृदयस्थल तक उत्तर जाता है कि राजनीति जब धर्म पर अधिष्ठित होगी, तभी वह पावन है और जब धर्म का राजनीति से संबंध होगा, तभी धर्म पवित्र है। मगर अफसोस, आज की भारतीय पीढ़ी सावरकर को केवल एक क्रांतिकारी के रूप में ही जानती है। इसमें भी दुर्भाग्यजनक यह कि एक क्रांतिकारी के रूप में भी उनके कार्यों का सही वर्णन लोगों तक नहीं पहुंच पाया। सावरकर का क्रांति दर्शन बड़ा सारगर्भित है। वह भागवत गीता से प्रेरित लगता है, सावरकर कहते हैं कि हमें शांति की स्थापना नहीं करनी है, हमें अन्याय को समाप्त करके न्याय की स्थापना करनी है, शांति शब्द न्याय की तुलना में छोटा है। न्याय स्थापित होते ही शांति स्वयं स्थापित हो जाएगी। वे संसार के पहले ऐसे क्रांतिकारी लेखक थे, जिनकी सबसे अधिक रचनाएं किसी शासन (ब्रिटिश शासन) ने जब्त की हों, हर विषय की पुस्तक अवैध घोषित की गई हो। सावरकर ने किशोरावस्था से ही मराठी में कविता लिखनी शुरू कर दी थी। वे हथियार उठाकर केवल अन्याय का प्रतिकार करना चाहते थे, क्योंकि वे मानते थे कि भीख में मिली आजादी की सुविधाओं से मुनष्य-समाज भ्रष्टाचारी, आलसी और अवसरवादी बन जाता है अर्थात् हिंसा और अहिंसा का विवाद ही बेकार है। किसी लक्ष्य की पवित्रता ऊंची चीज है, न की संघर्ष के तरीकों पर नए मतभेद खड़े करना। ❖

(लेखिका छत्तीसगढ़ की स्वतंत्र पत्रकार व पत्रकारिता हेतु कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं)

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

फुलवारी

विक्की अपने स्कूल में होने वाले स्वतंत्रता दिवस समारोह को लेकर बहुत उत्साहित था। वह भी परेड़ में हिस्सा ले रहा था। दूसरे दिन वह सुबह जग गया लेकिन घर में अजीब सी शांति थी। वह दादी के कमरे में गया, लेकिन वह दिखाई नहीं पड़ी। मां दादीजी कहां हैं? उसने पूछा। रात को वह बहुत बीमार हो गई थीं। तुम्हारे पिताजी उन्हें अस्पताल ले गए थे, वह अभी वहीं हैं। उनकी हालत काफी खराब है। विक्की एकाएक उदास हो गया।

उसकी मां ने पूछा, क्या तुम मेरे साथ दादी जी को देखने चलोगे? चार बजे मैं अस्पताल जा रही हूँ।

विक्की अपनी दादी से बहुत प्यार करता था। उसने तुरंत कहा, 'हाँ, मैं आप के साथ चलूँगा। वह स्कूल और स्वतंत्रता दिवस के समारोह के बारे में सब कुछ भूल गया। स्कूल में स्वतंत्रता दिवस बहुत अच्छी तरह संपन्न हो गया। लेकिन प्राचार्य खुश नहीं थे। उन्होंने ध्यान दिया कि बहुत से छात्र आज अनुपस्थित हैं।

उन्होंने दूसरे दिन सभी अध्यापकों को बुलाया और कहा, 'मुझे उन विद्यार्थियों के नामों की सूची चाहिए जो समारोह के दिन अनुपस्थित थे।'

आधे घंटे के भीतर सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों की सूची उन की मेज पर थी। कक्षा छः की सूची बहुत लंबी थी। अतः वह पहले उसी ओर मुड़े। जैसे ही उन्होंने कक्षा छः में कदम रखे, वहाँ चुप्पी सी छा गई। उन्होंने कठोरतापूर्वक कहा, 'मैंने परसों क्या कहा था?

यही कि हम सब को स्वतंत्रता दिवस समारोह में उपस्थित होना चाहिए?' गोलमटोल उषा ने जवाब दिया। 'तब बहुत सारे बच्चे अनुपस्थित क्यों थे?' उन्होंने नामों की सूची हवा में हिलाते हुए पूछा। फिर उन्होंने अनुपस्थित हुए विद्यार्थियों के नाम पुकारे, उन्हें डॉटा और अपने डंडे से उनकी हथेलियों पर मार लगाई। अगर तुम लोग राष्ट्रीय समारोह के प्रति इतने लापरवाह हो तो इसका मतलब यही है कि तुम लोगों को अपनी मातृभूमि से प्यार नहीं है। अगली बार अगर ऐसा हुआ तो मैं तुम सबका नाम स्कूल के रजिस्टर से काट दूँगा।'

इतना कह कर वह जाने के लिए मुड़े तभी विक्की आ कर उनके सामने खड़ा हो गया। 'क्या बात है?' महोदय, विक्की भयभीत पर दृढ़ था, मैं भी स्वतंत्रता दिवस समारोह में अनुपस्थित था, पर आप ने मेरा नाम नहीं पुकारा।' कहते हुए विक्की ने अपनी हथेलियाँ प्राचार्य महोदय के सामने फैला दीं। पूरी कक्षा सांस रोक कर उसे देख रही थी। प्राचार्य कई क्षणों तक उसे देखते रहे। उनका कठोर चेहरा नर्म हो गया और उन के स्वर में क्रोध गायब हो गया।

'तुम सजा के हकदार नहीं हो, क्योंकि तुम में सच्चाई कहने की हिम्मत है। मैं तुम से कारण नहीं पूछूँगा, लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि अगली बार राष्ट्रीय समारोह को नहीं भूलोगे। अब तुम अपनी सीट पर जाओ।' विक्की ने जो कुछ किया, इसकी उसे बहुत खुशी थी। ❖

पहेलियाँ

1. बाला था जब मन को भाया
बड़ा हुआ कुछ काम न आया
"खुसरो" कह दिया उस का नांव
बूझे नहीं तो छोड़े गाँव

2. ओर छोर न मेरा कोई प्रथम
हटे तो समझो काश
अंत कटे मालिक बन जाऊँ
मध्य कटे तो आश

3. दिमाग चलाओ और जवाब दो
..............................तरसते थे एक ....
के लिए। वो ....भी आया, एक........
.............के लिए। सोचा उस ....
.........को रख लू हर ....के लिए।
पर वो ....भी ना रुका एक ....
..........के लिए।
इन 9 खाली जगह में एक ही शब्द आयेगा...वो भी दो अक्षर में जिसमें कोई मात्रा नहीं है। बुद्धिमानी की परीक्षा

उत्तर : 1. दीया 2. आकाश 3. पल

चुटकुले

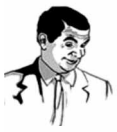

अध्यापक – शाबाश दीपक , मुझे खुशी है कि तुमने इतने अच्छे अंक लिए। आगे भी ऐसे ही अच्छे अंक लेना।

दीपक – अच्छा सर , पर आप भी परचे भाई साहब के प्रेस में छपवाते रहिएगा।

पप्पू ने कमाल कर दिया, वो बैंक में जाकर सो गया......

जब उससे पूंछा तो बोला, मैंने अखबार में विज्ञापन पढ़ा था कि इस बैंक में " सोने पर लोन " मिलता है......

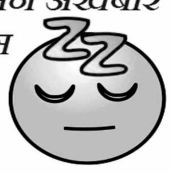

प्रश्नोत्तरी

1. हिमाचल प्रदेश में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाला जिला कौन सा है?
2. कनाडा में सम्पन्न विधायी चुनावों में विजय प्राप्त करने वाले हिमाचल प्रदेश के व्यक्ति का नाम बताइये?
3. दशमेश के नाम से कौन प्रसिद्ध हैं?
4. अभी हाल ही में किस पुराने शहर को दोबारा बसाने की योजना बनी है?
5. हिमाचल प्रदेश की पहली महिला बस ड्राईवर का क्या नाम है?
6. अपने देश में कितने ज्योतिर्लिंग हैं?
7. जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरिसिंह की पत्नी का नाम क्या था?
8. टमाटर का रंग हरे से लाल होने का कारण क्या है?
9. कबड्डी के विश्व कप का आयोजन किस राज्य में होना तय हुआ है?
10. किसानों के क्षेत्र में कार्यरत देश का सबसे बड़ा संगठन कौन सा है?

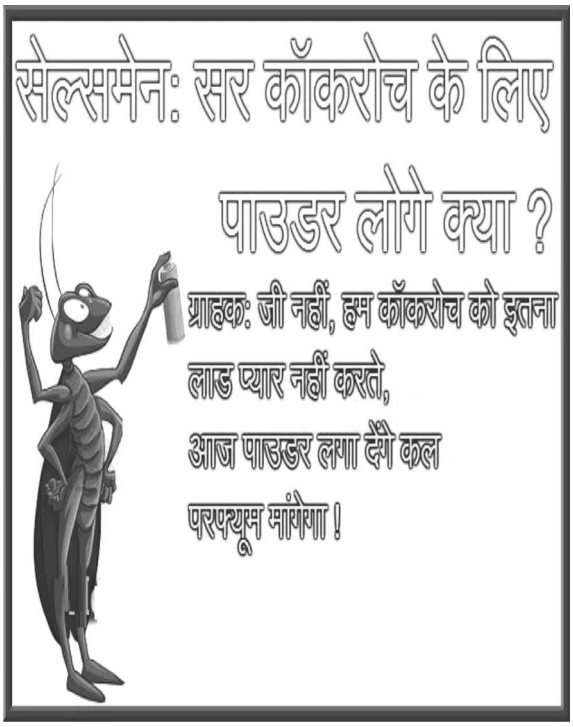

समस्त देशवासियों को
दीपावली, भईया दूज व
गुरु नानक देव जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं

- करण नंदा
(प्रवक्ता, भा.ज.यु.मो., हि.प्र.)
94187-00041, 94189-00990

MIT GROUP OF INSTITUTIONS BANI TEHSIL BARSAR DISTT. HAMIRPUR

H.P.-174304 (on UNA Express Highway)
B.tech, Polytechnic & International School

B.tech Courses	Polytechnic Courses	MIT International School
Mechnical Engg	Mechnical Engg	Nursery – 10th
Civil Engg	Civil Engg	
Electrical Engg	Electrical Engg	
Electronics and communication engg	Electronics and communication engg	
Computer Engg	Computer Engg	
Electrical and electronics Engg	Automobile Engg	
	Hotel Management	

Facilities:-

Transport Facility Available Separate boys and Girls Hostel Wifi Campus
Experienced and well qualified Faculty Best placements and Merits Record
Special Scholarships and discounts for low income students
Gym and Indoor/ Outdoor games facilities Restaurants and Cafes.

E-mail: mit_poly@yahoo.com
mit_engg@yahoo.com
website: www.mithmr.com

Admission Help line: 9805034000, 9805516018, 9805516003, 9805516030, 9805516001

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

CONTROLLED ATMOSPHERE STORES

TECHNOLOGY SOLUTIONS FROM FARM TO FORK

CONTRACT FARMING

FARM SUPPORT SERVICES

FOOD PROCESSING

ORGANIC FARMING

MEGA FOOD PARK

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

Designed by : **New Era Graphics**, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।